EDU TERIA
E - D.N.A
Daily Newspaper Analysis
Prelims Mains Essay
By- Nikhil Ranjan

Useful For Prelims

Date: 08 January 2026

नई कहानी आंदोलन से जुड़े महत्वपूर्ण कथाकार थे मोहन राकेश

साहित्यकार मोहन राकेश का जन्म 1925 में आज ही अमृतसर में हुआ था। जीविका हेतु अध्यापन से जुड़े। कुछ वर्षों तक सारिका पत्रिका का संपादक भी किया। आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस और आधे-अधूरे जैसे कालजयी नाटकों में स्वतंत्र भारत के शहरी मध्यमवर्गीय समाज में दरकते रिश्तों, व्यक्ति के एकाकीपन, मनोवैज्ञानिक उलझनों और पारिवारिक विघटन का मार्मिक चित्रण किया। वहीं नए बादल, जानवर और जानवर, एक और जिंदगी जैसी कहानियों में मध्यम वर्ग की समस्याओं को गहराई से उकेरा। आखिरी चट्टान तक व परिवेश जैसी उनकी रचनाएं भी काफी चर्चित रहीं।

Dainik Jagaran Page

विल्हेम रांटजेन ने पहली बार एक्स-रे का अवलोकन किया

1895 में आज ही जर्मन भौतिक विज्ञानी विल्हेम रांटजेन ने कैथोड किरणों के साथ प्रयोग करते हुए एक्स-रे का अवलोकन किया था। उन्होंने स्क्रीन पर एक चमक को देखा और महसूस किया कि ये नई एक्स-रे ठोस वस्तुओं से गुजर सकती हैं। इससे भौतिकी और चिकित्सा में क्रांति आ गई।

हरमन होलेरिथ ने अपने पंच्ड कार्ड कैलकुलेटर का पेटेंट कराया

1889 में आज ही अमेरिका के हरमन होलेरिथ ने पंच्ड कार्ड कैलकुलेटर का पेटेंट प्राप्त किया था। 1890 की अमेरिकी जनगणना में तेजी लाने के साथ इस आविष्कार ने डाटा प्रोसेसिंग में क्रांतिकारी बदलाव की नींव रखी। इसने आइबीएम के गठन का मार्ग भी प्रशस्त किया।

Dainik Jagaran Page

Sci & Tech

Hindustan Page

अंतरिक्ष में ही सेटेलाइट का ईंधन भरना होगा संभव

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) साल की शुरुआत एक अहम अंतरिक्ष मिशन से करने जा रहा है। 12 जनवरी को श्रीहरिकोटा से पीएसएलवी-सी62 रॉकेट का प्रक्षेपण किया जाएगा। इसरो इसके जरिए अंतरिक्ष में उपग्रहों में ईंधन भरने की तकनीक का परीक्षण कर रहा है। इसमें ऑर्बिटए-आईडी एयरोस्पेस द्वारा बनाया गया 'आयुलसैट' शामिल है, जो भारत का पहला अंतरिक्ष रिफ्यूलिंग पेलोड है। उद्देश्य सैटेलाइट्स की उम्र बढ़ाना और अंतरिक्ष कचरे को कम करना है।

इसरो पीएसएलवी-सी62 लॉन्च से करेगा साल का आगाज

राष्ट्रीय सुरक्षा और निगरानी

1 हाइपरस्पेक्ट्रल तकनीक की मदद से घने जंगलों या झाड़ियों के पीछे छिपे दुश्मनों, बंकरों या सैन्य गतिविधियों को आसानी से पहचाना जा सकेगा

कृषि और पर्यावरण

2 यह उपग्रह फसलों की सेहत, मिट्टी की नमी और फसलों में लगने वाली बीमारियों का बहुत बारीकी से पता लगाएगा। खनिजों की खोज और प्रदूषण का डाटा देगा

आपदा प्रबंधन

3 बाढ़, भूस्खलन या चक्रवात जैसी आपदाओं के समय राहत कार्यों के लिए यह तकनीक सटीक जानकारी देगी कहा कितना नुकसान और मदद की जरूरत है

अंतरिक्ष मलबे में कमी और उपग्रहों की लंबी उम्र

4 आयासैट द्वारा रिफ्यूलिंग तकनीक सफल होने पर पुराने पड़ चुके उपग्रहों में फिर से ईंधन भरकर उनका जीवनकाल बढ़ाया जा सकेगा। इससे अंतरिक्ष में कचरा कम होगा और नए उपग्रह भेजने का खर्च भी बचेगा

आर्थिक लाभ

5 विदेशी और निजी उपग्रहों को लॉन्च करके इसरो विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है। साथ ही, भारतीय स्टार्टअप्स को अंतरिक्ष में मौका मिलने से भारत की 'स्पेस इकोनॉमी' को मजबूती मिलेगी

जलवायु बदलाव से जुड़े संकेतों का भी होगा बारीक अध्ययन

अभियान के तहत यह पेड़-पौधों की स्थिति, मिट्टी की बनावट, पानी की गुणवत्ता और जलवायु बदलाव से जुड़े संकेतों का बारीक अध्ययन करेगा। इससे आपदा प्रबंधन, कृषि और सीमा सुरक्षा में देश को बड़ी मदद मिलेगी। साथ ही नीति निर्माण और वैज्ञानिक रिसर्च को भी मजबूती मिलेगी।

कैमरे में फिर कैद हुई 100 बार दिखने वाली जेलीफिश

ब्यूनस आयर्स, एजेंसी। वैज्ञानिकों ने अर्जेंटीना के तट के पास समुद्र की गहराइयों में एक बेहद दुर्लभ जीव, 'विशालकाय फैंटम जेलीफिश' का फुटेज कैप्चर किया है।

श्मिट ओशन इंस्टीट्यूट के एक रोबोटिक वाहन ने इसे सतह से करीब 830 फीट नीचे तैरते हुए देखा। इसकी भुजाएं 33 फीट से ज्यादा लंबी हैं, जिनका उपयोग यह शिकार फंसाने के लिए करती है। इसका मुख्य शरीर भी 3 फीट से चौड़ा होता है। 127 साल पहले पहली बार खोजे जाने के बावजूद, इसे केवल 100 बार ही देखा गया है। यह अक्सर समुद्र के 'मिडनाइट जोन' में रहती है, जहां रोशनी नहीं पहुंचती।

रोबोटिक कैमरों के बिना इसका अध्ययन नामुमकिन है, क्योंकि सतह पर लाते ही इसका नाजुक शरीर नष्ट हो जाता है।

चिंता : 2050 तक बढ़ेगा ई-कचरा

Hindustann Page

शिकागो, एजेंसी। पहनने वाले हेल्थ डिवाइस, जैसे- स्मार्टवॉच, ग्लूकोज मॉनिटर और ईसीजी पैच आदि से आने वाले समय में ई-कचरा बढ़ सकता है। कॉर्नेल और शिकागो विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों की एक ताजा रिसर्च के अनुसार, साल 2050 तक इन गैजेट से होने वाला पर्यावरण नुकसान चौंकाने वाला हो सकता है। अनुमान है कि 2050 तक हर साल लगभग 2 अरब वियरेबल डिवाइस बेचे जाएंगे। यह आज की तुलना में 42 गुना ज्यादा है। इनमें सबसे ज्यादा मांग ग्लूकोज मॉनिटर की होगी, जो बाजार का 75 फीसदी हिस्सा कवर करेंगे। इनके कारण 2050 तक सालाना 10 लाख टन से ज्यादा ई-कचरा होगा। साथ ही, इनके उत्पादन और इस्तेमाल से करीब 100 मिलियन टन सीओ2 का उत्सर्जन होगा, जो ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ाएगा। वैज्ञानिकों के मुताबिक, अगर हम मॉड्यूलर डिजाइन अपनाएं तो पर्यावरण पर पड़ने वाले असर को आधा किया जा सकता है।

भारत और चीन के लिए खतरे की घंटी

2050 तक वियरेबल डिवाइसेस (जैसे स्मार्टवॉच) से होने वाले ई-कचरे में भारत और चीन सबसे आगे होंगे। भारत पहले से ही दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ई-कचरा पैदा करने वाला देश है। भारत में 90 फीसदी ई-कचरे का निपटान पुराने और असुरक्षित तरीकों से होता है। गौरतलब है कि अंतराष्ट्रीय डाटा निगम की रिपोर्ट के अनुसार, साल 2025 में भारत में कुल वियरेबल डिवाइस की शिपमेंट संख्या के रूप में 51.6 करोड़ यूनिट्स दर्ज की गई। यह आंकड़ा 2025 की पहली छमाही में कुल शिपमेंट/डिलीवरी को दर्शाता है।

बृहस्पति के चांद यूरोपा पर जीवन की संभावनाओं पर सवाल

अध्ययन ▶ समुद्र तल की टेक्टोनिक व ज्वालामुखी गतिविधि का आकलन किया, यूरोपा का महासागर जीवन के लिए बंजर

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने 2024 में यूरोपा के लिए लांच किया था यान

वाशिंगटन, रायटर : बृहस्पति के एक चांद यूरोपा को जीवन के लिए संभावित स्थान माना जाता था, लेकिन अब संभावनाएं कम होती लग रही हैं। इसके नीचे एक बड़ा उपसतह महासागर होने की संभावना है, जो बर्फ की एक बाहरी परत के नीचे छिपा हुआ है। यूरोपा की बर्फीली परत पूर्व अनुमान से कहीं अधिक मोटी है। यह खोज यूरोपा पर जीवन की संभावना को कम करती है। नए शोध ने भी सवाल उठाया है कि क्या वास्तव में यूरोपा में जीवन के लिए आवश्यक परिस्थितियां मौजूद हैं?

यूरोपा पर जीवन की संभावनाएं नहीं : अध्ययन ने यूरोपा के महासागर के तल पर टेक्टोनिक और ज्वालामुखीय गतिविधि की संभावनाओं का आकलन किया, जो पृथ्वी पर चट्टान और समुद्री जल के बीच प्रतिक्रियाएं को सुविधाजनक बनाते हैं, जिससे जीवन के लिए आवश्यक पोषक तत्व और रासायनिक ऊर्जा पैदा होती है। यूरोपा की परिस्थितियों का माडलिंग करने के बाद शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि इसकी चट्टानी समुद्र तल संभवतः यांत्रिक रूप से इतनी मजबूत है कि ऐसी गतिविधियों की अनुमति नहीं देगा। शोधकर्ताओं ने यूरोपा के आकार, इसकी चट्टानी कोर की संरचना और बृहस्पति द्वारा उत्पन्न गुरुत्वाकर्षण बलों जैसे कारकों पर विचार किया। उनका आकलन यह बताता है कि यूरोपा के समुद्र तल पर शायद ही कोई सक्रिय फाल्टिंग मौजूद है, जो इस चंद्रमा को जीवन के लिए बंजर बनाता है।

बृहस्पति का चंद्रमा यूरोपा। सौजन्य-नासा

यूरोपा के समुद्र तल में चुनौतीपूर्ण वातावरण : वाशिंगटन विश्वविद्यालय के ग्रह विज्ञानी और अध्ययन के प्रमुख लेखक पाल बायरन ने कहा, "पृथ्वी पर टेक्टोनिक गतिविधियां जैसे कि दरारें और दोष नए चट्टानों को वातावरण के संपर्क में लाती हैं, जहां रासायनिक प्रतिक्रियाएं, मुख्य रूप से पानी के साथ ऐसे रसायनों का निर्माण करती हैं जैसे कि मीथेन, जिसका उपयोग सूक्ष्मजीव कर सकते हैं।" यह अध्ययन मंगलवार को जर्नल नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित हुआ। बायरन ने जोड़ा कि ऐसी गतिविधियों को स्थापित करना और बनाए रखना कठिन होता है, जिससे यूरोपा का समुद्र तल जीवन के लिए एक चुनौतीपूर्ण वातावरण बन जाता है। जीवन पृथ्वी पर अरबों साल पहले समुद्र तल के हाइड्रोथर्मल वेंट्स के चारों ओर गतिशील वातावरण में उभरा हो सकता है, लेकिन यूरोपा में ये विशेषताएं नहीं हैं। जार्जिया विश्वविद्यालय के भूविज्ञानी और अध्ययन के सह लेखक क्रिश्चियन क्लिम्जक ने कहा कि हमारे निष्कर्षों के आधार पर समुद्र तल में शायद प्रमुख टेक्टोनिक भू-आकृतियां नहीं होंगी, जैसे लंबे पहाड़ या गहरे खाइयां। वहां शायद कोई जल के नीचे के ज्वालामुखी या समुद्री पर्वत नहीं होंगे और हाइड्रोथर्मल गतिविधियां नहीं मिलेंगी।

क्या है यूरोपा की खासियत : यूरोपा, जिसका व्यास लगभग 1,940 मील (3,100 किमी) है, पृथ्वी के चंद्रमा से थोड़ा छोटा है। इसकी बर्फीली परत 10-15 मील (15-25 किमी) मोटी मानी जाती है, जो एक महासागर के ऊपर स्थित है, जो शायद 40-100 मील (60-150 किमी) गहरा है। बृहस्पति के 95 चंद्रमाओं में से चौथा सबसे बड़ा यूरोपा पृथ्वी के व्यास का लगभग एक चौथाई है। लेकिन इसका खारा तरल जल का महासागर पृथ्वी के महासागरों में मौजूद पानी की मात्रा से दोगुना हो सकता है। जीवन का समर्थन करने के लिए तीन प्रमुख कारक माने जाते हैं: तरल पानी, कार्बनिक रसायन और ऊर्जा। यूरोपा का उपसतह महासागर पहले आवश्यकताओं को पूरा करता था। नासा ने 2024 में यूरोपा क्लिपर अंतरिक्ष यान को जीवन के लिए परिस्थितियों का परीक्षण करने को लांच किया था।

भारत 2040 तक चंद्रमा पर अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने की बना रहा योजना

अहमदाबाद, प्रेट्र : पूर्व इसरो प्रमुख ए एस किरण कुमार ने बुधवार को कहा कि भारत 2040 तक चंद्रमा पर अपने अंतरिक्ष यात्रियों को उतारने की योजना बना रहा है। कुमार वर्तमान में भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) के प्रबंधन परिषद के अध्यक्ष हैं। वह 5वें एस्ट्रोनामिकल सोसाइटी आफ इंडिया (एएसआइ) संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, "अभी और 2040 के बीच बहुत सारे मिशन हैं जो अंतरिक्ष गतिविधियों में जाने वाले हैं। इसलिए, 2040 एक योजना है जहां हम भारतीयों को चंद्रमा पर उतारना और उन्हें सुरक्षित वापस लाना चाहते हैं। भारत 2040 तक एक अंतरिक्ष स्टेशन बनाने की दिशा में भी काम कर रहा है।"

उन्होंने कहा, निकट भविष्य में चंद्रयान अनुवर्ती मिशन होगा और लैंडर और रोवर के लिए जापान के साथ काम चल रहा है। कहा, "हमें दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र (चंद्रमा के) में कुछ विशिष्ट जानकारी खोजने की कोशिश करनी चाहिए। यह उससे आगे की शुरुआत होगी। एक देश के रूप में भारत अंतरिक्ष अवलोकन करने और फिर ब्रह्मांड को समझने के लिए प्रतिबद्ध है।" वहीं, भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान की निदेशक प्रोफेसर अन्नपूर्णी सुब्रमण्यम ने कहा, भारत में अंतरिक्ष संस्थानों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है, पर उन्हें नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। महिलाओं को अधिक संस्थागत और पारिवारिक समर्थन की आवश्यकता है।

ए एस किरण कुमार।

भारत एक अंतरिक्ष स्टेशन बनाने की दिशा में भी काम कर रहा है

धरती के करीब सूर्य, उत्तरी गोलार्ध में प्रचंड ठंड

जागरण संवाददाता, नैनीताल

सतह पर उठ रही भभूकाओं के बीच इन दिनों सूर्य हमारे करीब है। सौर सक्रियता के चलते आगे भी विस्फोट जारी रहने का अनुमान है। इसके उलट आजकल धरती का उत्तरी छोर प्रचंड ठंड से जूझ रहा है। सूर्य की किरणें तिरछी पड़ने से उत्तरी गोलार्ध में ठंड चरम पर है।

सूर्य हमारी धरती से करीब 15 करोड़ किमी दूर है। इन दिनों यह पृथ्वी के करीब 45 लाख किमी यानी तीन प्रतिशत और नजदीक पहुंच चुका है। ऐसे में गर्मी का एहसास भी अधिक होना चाहिए लेकिन ऐसा बिलकुल नहीं है। इसकी वजह सूर्य की किरणों का उत्तरी गोलार्ध में तिरछा पड़ना है।

आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) नैनीताल के पूर्व निदेशक व सौर विज्ञानी डा. वहाबउद्दीन के अनुसार सूर्य इन दिनों पृथ्वी के तीन प्रतिशत नजदीक है। तीन जनवरी को यह सबसे करीब था, जिसे पेरिहेलियन डे कहा जाता है। सूर्य की किरणों का तिरछा होने का क्रम सितंबर के बाद से शुरू हो जाता है और मार्च तक रहता है। इसके विपरीत दक्षिणी गोलार्ध में इन दिनों गर्मी है। अब सूर्य उत्तरायण होने लगा है। जिससे धीरे-धीरे गर्मी का एहसास भी बढ़ने लगेगा। इतना ही नहीं सूर्य के 25वें सौर चक्र की सक्रियता जारी है और आने वाले दिनों में भी सूर्य की सतह पर बड़े विस्फोटों का दौर जारी रहने का अनुमान है।

बरकरार है सौर सक्रियता

डा. वहाबउद्दीन के अनुसार यह 25वां सोलर साइकिल (सौर चक्र) है, जो इन दिनों अधिकतम सक्रियता के दौर से गुजर रहा है। करीब डेढ़ वर्षीय इस सौर चक्र के दौरान भयानक विस्फोट सूर्य की सतह पर हुए हैं। जिनसे सौर तूफान पृथ्वी की ओर आते रहे और ब्लैक आउट जैसी घटनाएं भी हुईं। आने वाले दिनों में भी सूर्य की सतह पर विस्फोटों का दौर जारी रहने का अनुमान है।

▶ अधिकतम सौर सक्रियता के दौर से गुजर रहा सूर्य इन दिनों धरती के 45 लाख किमी नजदीक

नासा की ओर से जारी सूर्य की तस्वीर। सौजन्य इंटरनेट

मक्का की नई किस्म में अब मिलेगा दूध जैसा पोषण

अल्मोड़ा, वरिष्ठ संवाददाता। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से जुड़े विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (वीपीकेएएस), अल्मोड़ा ने मक्का की एक नई और उन्नत किस्म विकसित की है।

यह देश की पहली ऐसी मक्का (भुट्टा) किस्म है, जिसमें तीन पोषक गुण एक साथ मौजूद हैं। मक्का की यह किस्म दूध जैसा पोषण देने में कारगर होगी।

इसका नाम 'वी एल त्रिपोषी' रखा गया है और 31 दिसंबर को इसे खेती के लिए अधिसूचित कर दिया गया है।

■ **भारतीय वैज्ञानिकों की बड़ी उपलब्धि, इसका नाम 'वी एल त्रिपोषी' रखा गया है**

संस्थान के निदेशक डॉ. लक्ष्मीकांत ने बताया कि यह किस्म दो उन्नत लाइनों के संयोजन से तैयार की गई है। इसमें उच्च प्रोटीन (क्यूपीएम), विटामिन ए की पूर्ति करने वाला प्रोविटामिन ए और कम फाइटेट जैसे गुण मौजूद हैं। इस मक्का में मौजूद क्यूपीएम प्रोटीन का जैविक मान दूध के प्रोटीन के करीब 90 प्रतिशत तक होता है, जिससे यह बेहद पौष्टिक बन जाती है।

Hindustann Page

भारत पहला बायो-बिटुमेन उत्पादक देश बनेगा : गडकरी

तैयारी

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। देश के सड़क बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में क्रांतिकारी युग की शुरूआत होने जा रही है। यहां के वैज्ञानिकों ने ऐतिहासिक बायो-बिटुमेन उत्पादन करने की तकनीक उपलब्धि हासिल की है। इस प्रकार भारत दुनिया का पहला बॉयो-बिटुमेन उत्पादक देश बना जाएगा।

देश के किसान अब केवल अन्नदाता ही नहीं, बल्कि सड़कों के लिए बिटुमेनदाता भी बनेंगे। सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बुधवार को सीएसआईआर-सीआरआरआई द्वारा आयोजित टेक्नोलॉजी ट्रांसफर कार्यक्रम में उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि भारत कृषि अवशेषों से बायो-बिटुमेन का व्यावसायिक उत्पादन करने वाला दुनिया का पहला देश बनने जा रहा है। गडकरी ने कहा कि पराली अब समस्या नहीं वेल्थ बनेगी।

गडकरी ने कहा कि हर साल पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में पराली जलाना एक गंभीर वायु प्रदूषण का कारण बनता है। आंकड़ों के अनुसार केवल इन दो राज्यों में पराली जलाने से 1.6 लाख टन धूल उत्सर्जित होती है।

सफल रहा परीक्षण

इस तकनीक का सफल परीक्षण पहले ही वर्ष अक्तूबर 2024 में जोराहट-शिलांग खंड (100 मीटर) और नागपुर-जबलपुर नेशनल हाईवे (1 किमी) पर किया जा चुका है। विशेषज्ञों का मानना है कि बायो-बिटुमेन से बनी सड़कों की मैकेनिकल स्ट्रेंथ (ताकत) बेहतर होती है और इनकी उम्र भी लंबी होती है।

ये है बायो-बिटुमेन उत्पादक

बिटुमेन पेट्रोलियम रिफाइनिंग के दौरान प्राप्त होने वाला एक गाढ़ा, चिपचिपा, काला पदार्थ है, जो सड़क निर्माण कार्यों में सामग्री को जोड़ने वाले पदार्थ के रूप में इस्तेमाल होता है। सीएसआईआर-सीआरआरआई व सीएसआईआर देहरादून द्वारा विकसित तकनीक पैरोलीसिस पर आधारित है। इसमें धान के भूसे का उपयोग कर जीरो वेस्ट मॉडल सुनिश्चित होता है।

नई तकनीक के माध्यम से अब इस 600 मिलियन टन से अधिक के कृषि कचरे को सड़क निर्माण के संसाधन में बदला जाएगा। गडकरी ने कहा यह कृषि कचरे को धन (वेस्ट टू वेल्थ) में बदलने की कहानी है। इससे सालाना 4,500 करोड़ की विदेशी मुद्रा की बचत होगी। वर्तमान में भारत अपनी कुल जरूरत का 40-50 फीसदी बिटुमेन आयात करता है, जिस पर सालाना 25,000 से 30,000 करोड़ रुपये खर्च होते हैं। वित्त वर्ष 2025-26 तक देश में बिटुमेन की मांग 100 लाख टन तक पहुंचने की उम्मीद है। बिटुमेन में केवल 15% बायो-बिटुमेन के मिश्रण से देश को हर साल 4,500 करोड़ की विदेशी मुद्रा की बचत होगी।

दुनिया में बॉयो-बिटुमेन पर अभी शोध : दुनिया में जहां अभी भी बॉयो-बिटुमेन के व्यवसायिक इस्तेमाल पर शोध हो रहा है, वहीं भारत अपनी घरेलू तकनीक के साथ वैश्विक स्तर पर नेतृत्व करने को तैयार है। यह न केवल कच्चे तेल पर हमारी निर्भरता कम करेगा, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर किसानों को ऊर्जादाता के रूप में नई पहचान देगा।

देश में पराली से बनेगा बायो बिटुमिन, 14 कंपनियों को किया गया टेक्नोलाजी ट्रांसफर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- सीएसआइआर- सीआरआरआइ और आइआइपी के सफल परीक्षण के बाद व्यावसायिक उत्पादन को हरी झंडी
- गडकरी और जितेंद्र सिंह ने कंपनियों को सौंपे लाइसेंस, बचेगा पेट्रो-बिटुमिन के आयात का 25-30 हजार करोड़

मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत के सोच के साथ कदम बढ़ाते हुए देश के विज्ञानियों ने पराली प्रबंधन का ऐसा तोड़ निकाला है, जो न सिर्फ प्रदूषण कम करने में मददगार होगा, बल्कि पेट्रो बिटुम्मिन के आयात पर प्रतिवर्ष खर्च होने वाला देश के खजाने का 25-30 हजार करोड़ भी बचाएगा। खास बात है कि यह अनुसंधान प्रयोगशालाओं व पायलट प्रोजेक्ट से आगे बढ़ते हुए व्यावसायिक उत्पादन तक पहुंच चुका है।

काउंसिल आफ साइंस एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च- सेंट्रल रोड रिसर्च इंस्टीट्यूट और सीएसआइआर- इंडियन इंस्टीट्यूट आफ पेट्रोलियम देहरादून की इस सफलता की सराहना करते हुए केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी और केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डा. जितेंद्र सिंह ने नौ राज्यों की 14 कंपनियों को व्यावसायिक उत्पादन का लाइसेंस प्रदान किया। सीएसआइआर की महानिदेशक एन. कलाइसेल्वी ने बताया कि भारत एक ही वर्ष में जैव-बिटुमिन प्रौद्योगिकी को औद्योगिक और वाणिज्यिक स्तर पर ले जाने वाला विश्व का पहला देश बन गया है। उन्होंने बताया कि इस प्रक्रिया में बायो-बिटुमिन के साथ ही कई मूल्यवान सह-उत्पाद भी प्राप्त होते हैं। यदि सड़कों के लिए जैव-बाइंडर यानी बायो-बिटुमिन को मूल उत्पादन मानें तो उसके अलावा गैसीय ईंधन, जैव-कीटनाशक सहित बैटरी, जल शोधन और कई साम्रग्रियों में उपयोग के लिए उच्च श्रेणी का कार्बन भी मिलता है। उन्होंने दावा किया कि पराली से बायो-बिटुमिन बनाने की यह प्रक्रिया प्रदूषण-मुक्त और लागत में काफी किफायती है। महानिदेशक ने बताया कि मेघालय में जोरबाट-शिलांग एक्सप्रेसवे (एनएच-40) पर बायो-बिटुमिन का उपयोग करके 100 मीटर का एक परीक्षण खंड सफलतापूर्वक बिछाया जा चुका है, जिससे जमीनी स्तर पर इसकी पुष्टि हुई है। इस प्रौद्योगिकी के पेटेंट के लिए आवेदन किया जा चुका है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बताया कि भारत में अभी प्रतिवर्ष लगभग सौ लाख टन बिटुमिन की आवश्यकता होती है, जिसमें से करीब 50 प्रतिशत का आयात करना पड़ता है। इस पर प्रतिवर्ष 25 से 30 हजार करोड़ रुपये खर्च होते हैं।

ब्लाक होने के बाद भी दुश्मन पर वार करेगा ये मल्टी-फ्रीक्वेंसी ड्रोन

जागरण विशेष

डीएवीवी की बड़ी उपलब्धि : सेना के टास्क पर डेढ़ साल की रिसर्च के बाद अमोघ द्विवेदी और पार्थ तिवारी ने तैयार किया 10 फ्रीक्वेंसी पर काम करने वाला ड्रोन

भरत मानधन्या • नई दुनिया

इंदौर: रक्षा क्षेत्र में ड्रोन की भूमिका लगातार बढ़ रही है। निगरानी से लेकर आवश्यक सामग्री पहुंचाने तक, आधुनिक युद्ध और सुरक्षा व्यवस्था में ड्रोन अहम कड़ी बन चुके हैं। इसी दिशा में इंदौर स्थित देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (डीएवीवी) के छात्रों ने एक ऐसा मल्टी-फ्रीक्वेंसी ड्रोन विकसित किया है, जो दुश्मन द्वारा फ्रीक्वेंसी ब्लाक किए जाने की स्थिति में भी गिरता नहीं और अपना आपरेशन जारी रखता है। एक साथ कई फ्रीक्वेंसी पर काम करने की क्षमता के कारण यह ड्रोन जटिल परिस्थितियों में अधिक भरोसेमंद साबित हो सकता है।

डीएवीवी के इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलाजी संस्थान (आइईटी) के विद्यार्थी अमोघ द्विवेदी और पार्थ तिवारी ने इस ड्रोन को विकसित किया है, जिसे 'फ्रीक्वेंसी हापिंग कामिकाजा ड्रोन' नाम दिया गया है।

कामिकाजा ड्रोन ऐसे मिशन के लिए डिजाइन किए जाते हैं, जिनमें लक्ष्य तक पहुंचना ही प्राथमिक उद्देश्य होता है। इन्हें वापसी के लिए नहीं, बल्कि मिशन पूरा करने के लिए तैयार किया जाता है। तकनीकी भाषा में इन्हें लाइटरिंग म्यूनिशन भी कहा जाता है।

आम तौर पर ड्रोन सिंगल फ्रीक्वेंसी पर संचालित होते हैं। ऐसे में यदि दुश्मन उस फ्रीक्वेंसी को ब्लाक कर दे, तो ड्रोन निष्क्रिय हो सकता है। इसी तकनीकी कमी को दूर करने के लिए छात्रों ने मल्टी-फ्रीक्वेंसी हापिंग सिस्टम विकसित किया है, जिससे ड्रोन ब्लाक होने के बाद सक्रिय रह सकता है। यह दुश्मन क्षेत्र में ग्रेनेड लांच करने या आरडीएक्स ले जाने में सक्षम है।

सेना के टास्क पर हुआ अनुसंधान: विद्यार्थियों के अनुसार, वे पिछले दो वर्षों से ड्रोन टेक्नोलाजी पर अनुसंधान कर रहे थे। इसी दौरान सेना की एक तकनीकी टीम की ओर से मल्टी-फ्रीक्वेंसी ड्रोन विकसित करने का टास्क मिला। जिस पर करीब डेढ़ साल की रिसर्च के बाद उन्होंने ड्रोन का प्रोटोटाइप तैयार किया। इसकी टेस्टिंग पहले प्रयोगशाला स्तर पर हुई, इसके बाद सेना के अधिकारियों के समक्ष परीक्षण किया गया, जो सफल रहा। इस नवाचार के लिए पेटेंट आवेदन भी किया गया है।

दस फ्रीक्वेंसी पर करता है काम

- ड्रोन एक साथ दस अलग-अलग फ्रीक्वेंसी पर काम करने में सक्षम है।
- आपरेशन के दौरान यदि एक फ्रीक्वेंसी ब्लाक होती है, तो ड्रोन तुरंत दूसरी फ्रीक्वेंसी पर शिफ्ट हो जाता है।
- नौ बार तक फ्रीक्वेंसी ब्लाक होने के बावजूद भी यह ड्रोन मिशन जारी रख सकता है।
- आगे के चरण में ड्रोन को इस तरह अपग्रेड करने पर काम हो रहा है कि एयर डिफेंस सिस्टम से बचाव की क्षमता और बेहतर हो सके।

रेंज और पेलोड क्षमता

- वर्तमान में ड्रोन की रेंज करीब छह किलोमीटर है।
- दो किलो तक वजन उठाने की क्षमता है।
- इन क्षमताओं के आधार पर ड्रोन को सुरक्षा आपरेशनों में सामग्री पहुंचाने जैसे प्रयोगात्मक उपयोगों के लिए सक्षम बनाया गया है। फिलहाल इसके रेंज और पेलोड क्षमता बढ़ाने पर काम जारी है।

आसान भाषा में समझें

समस्या: सिंगल फ्रीक्वेंसी ड्रोन आसानी से ब्लाक हो जाते हैं।
समाधान: मल्टी-फ्रीक्वेंसी हापिंग तकनीक।
लाभ: ब्लाक होने के बाद भी आपरेशन जारी।
भविष्य: एयर डिफेंस सिस्टम से बेहतर बचाव की क्षमता।

ड्रोन के साथ अमोघ द्विवेदी और पार्थ तिवारी • नईदुनिया

हम पिछले दो वर्षों से ड्रोन टेक्नोलाजी पर अनुसंधान एवं विकास कर रहे हैं। डेढ़ साल की मेहनत के बाद यह मल्टी-फ्रीक्वेंसी ड्रोन तैयार हुआ है, जिसकी टेस्टिंग भी सफल रही है।
-अमोघ द्विवेदी, छात्र, आइईटी (डीएवीवी)

ड्रोन को अपग्रेड करने की दिशा में काम जारी है। इसमें रेंज बढ़ाने और एयर डिफेंस सिस्टम से बचाव की क्षमता को और मजबूत करने पर फोकस है।
-पार्थ तिवारी, छात्र, आइईटी (डीएवीवी)

आइईटी के विद्यार्थियों द्वारा मल्टी-फ्रीक्वेंसी ड्रोन पर किया गया कार्य सफल रहा है। ड्रोन इस तकनीक पर काम कर रहा है और अब इसके अपग्रेडेशन की प्रक्रिया चल रही है। **-शांतनु वाइकर,** प्रभारी सीइओ, डीएवीवी इनक्यूबेशन सेंटर

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

Dainik Jagaran Page

BIHAR

शपथः जस्टिस संगम पटना हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश

पटना विधि संवाददाता। पटना हाईकोर्ट के 47वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में न्यायमूर्ति संगम कुमार साहू ने बुधवार सुबह दस बजे पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। राजभवन में राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खां ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

शपथ ग्रहण समारोह में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा व अन्य मंत्रीगण, विधानसभा के अध्यक्ष डॉ प्रेम कुमार, मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, हाईकोर्ट के सभी जजों के अलावा बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष एवं राज्यसभा सदस्य मनन कुमार मिश्रा, महाधिवक्ता पीके शाही, बिहार स्टेट बार काउंसिल के अध्यक्ष रमाकांत शर्मा, ओडिशा हाई कोर्ट के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति चक्रधारी शरण सिंह, हाई कोर्ट के तीनों अधिवक्ता संघ के पदाधिकारीगण, मुख्य न्यायाधीश के परिजन सहित अधिवक्तागण उपस्थित रहे।

➤ देखें P 04

हाईकोर्ट के 47वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में ली शपथ

पटना जिले में तीन नए साइबर थाने खुलेंगे

- बढ़ते साइबर अपराध के मद्देनजर आईजी ने सभी एसपी के साथ बैठक की
- हर एसपी के अधीन अब एक साइबर थाना होगा, अभी एक थाना है जिले में

पटना, प्रधान संवाददाता। पटना जिले में तीन नए साइबर थाने खोले जाएंगे। वर्तमान समय केवल एक साइबर थाना है। राज्य सरकार से स्वीकृति मिलने के बाद पटना जिले के प्रत्येक एसपी के अधीन एक साइबर थाना होगा।

बुधवार को आईजी (पटना रेंज) जितेंद्र राणा ने साइबर अपराध पर नियंत्रण के लिए एसएसपी कार्तिकेय के शर्मा समेत जिले के चारों एसपी और डीएसपी के साथ बैठक की। आईजी ने कहा कि साइबर अपराध की घटनाएं बढ़ी हैं, इसीलिए जिले में चार साइबर थानों की जरूरत हो गई है। वर्तमान में नेहरू पथ पर साइबर थाना है। रोज औसतन छह से सात एफआईआर यहां दर्ज हो रही हैं। साइबर थाने में वर्तमान में 55 सौ शिकायतें दर्ज हैं। इनमें मात्र पांच सौ का अनुसंधान पूरा हुआ है। लगभग पांच हजार मामले अब भी लंबित हैं। तीन और साइबर थाना बनने के बाद अनुसंधानकर्ताओं की संख्या बढ़ जाएगी। पटना मध्य, पूर्वी, पश्चिमी और ग्रामीण एसपी के अधीन आने वाले केस को संबंधित साइबर थानों में दर्ज किया जा सकेगा। राज्य सरकार से स्वीकृति के बाद पटना मध्य, पश्चिमी, पूर्वी और ग्रामीण क्षेत्र में एक-एक साइबर थाना होगा।

अनुसंधान कार्य में तेजी लाएं: आईजी ने कहा कि साइबर अपराध को लेकर थानों में जो मामले दर्ज कराए गए हैं, उनका निपटारा तेजी से करें। लंबित कांडों का थानावार सूची बनाकर उन्हें निपटाएं। कांडों के अनुसंधान में स्थानीय थानाध्यक्ष, अंचल निरीक्षक, डीएसपी का भी सहयोग लें, ताकि समय पर पूरा किया जा सके। साइबर से संबंधित दर्ज कांडों में घटना घटित होने वाले क्षेत्र के पुलिस अधीक्षक, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, थानाध्यक्ष कांड के अनुसंधानकर्ता को सहयोग करें। इससे फायदा होगा कि लोगों को समय पर न्याय मिलेगा।

हर माह एक घटना का अनुसंधान एसपी करेंगे

आईडी ने कहा कि माह में कोई एक बड़ा साइबर से संबंधित दर्ज कांड का अनुसंधान संबंधित पुलिस अधीक्षक स्वयं करें। ऐसे में बड़े कांड का खुलासा भी हो जाएगा। साइबर से संबंधित कांड के अनुसंधानकर्ता अनुसंधान के लिए टेलीकॉम कंपनियां, सोशल मीडिया, संबंधित बैंक मैनेजर से समन्वय स्थापित कर त्वरित निपटारा करें। पुलिस अधीक्षक साइबर कांडों के अनुसंधान में थानावार एक पुलिस अवर निरीक्षक को नामित करें, जो अनुसंधानकर्ता को सहयोग करे।

20 वर्षों में जारी नियमों का संग्रह तैयार

राजस्व विभाग

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। राजस्व विभाग ने वर्ष 2003 से 2023 के बीच जारी सभी विभागीय परिपत्रों और नियमों को संग्रहित कर चार खंडों में कम्पोडियम तैयार किया है। बुधवार को उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने इसका विमोचन किया।

कम्पोडियम प्रकाशित करने का उद्देश्य विभाग के अंतर्गत लागू राजस्व नियमों, अधिनियमों की प्रामाणिक जानकारी राज्य के सभी अधिकारियों एवं क्षेत्रीय कार्यालयों तक उपलब्ध कराना है। विभागीय कक्ष में पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि इतने वर्षों के नियमों और परिपत्रों को एक स्थान पर संकलित करने से विभागीय कार्यप्रणाली में एकरूपता आएगी और निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिक पारदर्शी बनेगी। कम्पोडियम की उपलब्धता से अधिकारियों को नियमसंगत कार्य करने में सहूलियत होगी। कम्पोडियम के भाग-1 में भू-अभिलेख, परिमाप तथा चकबंदी से संबंधित संग्रह है। भाग-2 में भू-अर्जन तथा भाग-3 में (ए) में खासमहाल, भू-हस्तान्तरण, भूमि बन्दोबस्ती, लोक भूमि अतिक्रमण, राजस्व संग्रहण, भू-लगान से संबंधित संग्रह है। भाग-4 के अध्याय एक में भूमि दाखिल-खारिज, जमाबंदी, भूमि दखल कब्जा प्रमाणपत्र, अध्याय दो में क्षेत्रीय राजपत्रित स्थापना, अध्याय तीन में क्षेत्रीय अराजपत्रित स्थापना, अध्याय चार में बिहार गजेटियर, अध्याय पांच में कृषि गणना, अध्याय छह में भूमि विवाद निराकरण, भूमि पैमाइश, अध्याय सात में बिहार भूमि न्यायाधिकरण और अध्याय आठ में भू-अर्जन से संबंधित परिपत्र संग्रहित हैं।

मुख्य सचिवालय में विभागीय पुस्तकों का लोकार्पण करते उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा। साथ में प्रधान सचिव सीके अनिल।

रिकॉर्डः वैभव शतक लगाने वाले सबसे युवा कप्तान बने

बेनोनी, एजेंसी। वैभव सूर्यवंशी ने अंडर-19 क्रिकेट में अपना रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन जारी रखा है। सबसे युवा कप्तान बनने के बाद बिहार का 14 साल का यह विस्फोटक बल्लेबाज बुधवार को सबसे युवा शतकवीर कप्तान भी बन गया।

सूर्यवंशी ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीसरे और अंतिम वनडे में 74 गेंदों में 10 छक्कों और नौ चौकों से 127 रन की तूफानी पारी खेली। इससे भारतीय अंडर-19 टीम ने सात विकेट पर 393 रन बनाए जो इस टीम के खिलाफ उसका सबसे बड़ा स्कोर है।

पहले विकेट की रिकॉर्ड साझेदारी : सूर्यवंशी ने आरोन जॉर्ज (118) के साथ पहले विकेट के लिए 154 गेंदों में तबाड़तोड़ 227 रन जोड़े। यह यूथ क्रिकेट में भारत की ओर से पहले विकेट के लिए सबसे बड़ी जबकि कुल तीसरी सबसे बड़ी साझेदारी है। इन दोनों ने अंकुश बैंस और अखिल हरवाडकर का 12 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा। अंकुश और बैंस ने 2013 में जिम्बाब्वे के खिलाफ पहले विकेट के लिए 2108 रन जोड़े थे।

चौथा सबसे तेज शतक : सूर्यवंशी ने अर्धशतक 24 गेंदों तो शतक 63 गेंद में पूरा किया। यह यूथ वनडे में पाकिस्तान के कासिम अकरम के साथ चौथा संयुक्त सबसे तेज सैकड़ा है। रिकॉर्ड पाकिस्तान के समीर मिनहास (42 गेंद) के नाम है। दूसरे (52 गेंद) और तीसरे (56 गेंद) पर सूर्यवंशी ही हैं।

03 शतक यूथ वनडे में और चार अर्धशतक अब तक 18 मैच में जड़ चुके सूर्यवंशी

09 सौ 73 रन 54.05 की औसत और 164.08 के स्ट्राइक रेट से बना चुके हैं

दक्षिण अफ्रीका को क्लीन स्वीप किया

भारतीय टीम ने दक्षिण अफ्रीका को 233 रन से हराकर तीन मैचों की सीरीज में 3-0 से क्लीन स्वीप किया। मेजबान टीम 394 रन के विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए 35 ओवर में 160 रन पर ढेर हो गई। टीम ने 26 गेंदों में मात्र 15 रन पर चार विकेट गंवा दिए थे।

सूर्यवंशी ने गेंदबाजी में भी हाथ आजमाए, विकेट लेने में सफल

किशन सिंह ने जोरिच वैन शाल्कविक, अदनान लागडियन और लेथाबो को पवेलियन भेजा। कप्तान मुहम्मद बुलबुलिया को हेनिल पटेल ने आउट किया। डेनियल बोसमैन (40), पॉल जेम्स (41), कॉर्ने बोथा (नाबाद 36) और रोल्स (19) ही दोहरे अंक तक पहुंचे। भारत ने सूर्यवंशी सहित सात गेंदबाज आजमाए। सभी ने कम से कम एक विकेट जरूर झटका।

बिहार की विकास दर 13 फीसदी के पार, जीएसडीपी में भी उछाल

357 विकास योजनाओं को हरी झंडी, इन पर 16887 करोड़ खर्च होंगे

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार की विकास दर 13.09 फीसदी हो गई है। वर्तमान मूल्य पर वर्ष 2024-25 का जीएसडीपी में वार्षिक वृद्धि दर 13.09 फीसदी है, जबकि स्थिर मूल्य पर वार्षिक वृद्धि दर 8.64 फीसदी है। वहीं बिहार में सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) बढ़कर 76490 रुपए हो गया है। यह वर्तमान मूल्य पर वर्ष 2024-25 का प्रति व्यक्ति सकल राज्य घरेलू उत्पाद है। जबकि, स्थिर मूल्य पर यह 40973 रुपए है।

यह जानकारी योजना एवं विकास मंत्री बिजेन्द्र प्रसाद यादव ने दी। बताया कि राज्य की 357 विकास योजनाओं को हरी झंडी मिली है। इन पर 16 हजार 887 करोड़ रुपए खर्च होंगे। मंत्री ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2025-26 में

सूचना भवन में बुधवार को पत्रकारों से बात करते योजना एवं विकास मंत्री बिजेन्द्र प्रसाद यादव। साथ में विभाग के प्रधान सचिव मयंक बरबड़े, निदेशक रंजीत कुमार।

दिसंबर तक इन योजनाओं को स्वीकृत प्रदान की गयी है। वे बुधवार को सूचना भवन में पत्रकारों से बात कर रहे थे। उन्होंने विभाग की योजनाओं और उपलब्धियों की जानकारी साझा की। मंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री निश्चय स्वयं सहायता योजना के तहत 8.76 लाख युवाओं को सहायता दी गयी है। इन्हें 1267 करोड़ का भुगतान किया गया है। इसी तरह मुख्यमंत्री क्षेत्र विकास योजना अंतर्गत 72206 योजनाओं को पूरा किया गया है। जबकि, 17621 योजनाओं पर तेजी से काम चल रहा है। पूर्ण की गयी योजनाओं पर 3634 करोड़ रुपए खर्च किये गये हैं। इसके अलावा सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना में 18 वीं लोकसभा सांसदों की अनुशंसा वाली 1108 योजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं। इन पर 117.65 करोड़ खर्च हुए हैं। जबकि, राज्यसभा सांसदों की अनुशंसा पर 261.95 करोड़ की 2914 योजनाएं पूरी की जा चुकी हैं। श्री यादव ने कहा कि षष्ठम राज्य वित्त आयोग की अनुशंसा पर दो हजार पंचायत सरकार भवनों के निर्माण की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गयी है। इसके पूर्व राज्य योजना अंतर्गत 1162 पंचायत सरकार भवनों का निर्माण पूरा किया जा चुका है। इसके अलावा पंचायत सुदृढ़ीकरण योजना के तहत 293 भवनों का निर्माण पूर्ण किया गया है। इस अवसर पर विभाग के प्रधान सचिव मयंक बरबड़े, निदेशक रंजीत कुमार मौजूद थे।

तैयारी: बिहार सभी छोटी-बड़ी नदियों की कुंडली बनाएगा

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार अपनी छोटी-बड़ी सभी नदियों की कुंडली तैयार करेगा। उनका एटलस बनाएगा। इसमें नदियों से जुड़ी तमाम जानकारी होगी। किस जिले में कौन सी नदी है, कहां से शुरू होती है, कहां तक बहती है, ये सारी जानकारी इस एटलस में रहेगी। सरकार का मानना है कि नदियों का एटलस तैयार हो जाने के बाद भविष्य में नदियों को लेकर कार्ययोजना बनाने में मदद मिलेगी।

जल संसाधन विभाग ने इसकी तैयारी शुरू कर दी है। पिछले दिनों विभाग के प्रधान सचिव संतोष कुमार मल्ल ने नदियों के एटलस को लेकर उच्चस्तरीय बैठक की थी। इसमें सभी संबंधित अभियंताओं को नदियों के एटलस को लेकर निर्देश जारी करने का निर्णय लिया गया। इसके बाद विभाग ने सभी क्षेत्रीय अभियंताओं को दिशा-निर्देश जारी किया है। विभाग ने हाल में पूरे प्रदेश में नदियों का सर्वे किया है। इस समय इस सर्वे की समीक्षा मुख्यालय स्तर पर चल रही है। इसके पूरा हो जाने के बाद नदियों की वर्तमान जानकारी विभाग के पास उपलब्ध हो जाएगी। लेकिन, विभाग नदियों के संबंध में विस्तृत जानकारी तैयार करना चाहता है। इसी कारण से नदियों को लेकर एक परफार्मा बनाया गया है। संबंधित अभियंताओं से इसी विहित प्रपत्र में जानकारी मांगी गई है।

- एटलस में नदियों की पूरी जानकारी होगी
- सर्वे के बाद जल संसाधन विभाग ने बनायी कार्ययोजना
- नदी संरक्षण को लेकर योजना बनाने में मिलेगी मदद

अपने जिले की नदी के बारे में जान सकेंगे

जल संसाधन विभाग का मानना है कि इस एटलस के बाद सरकार के साथ-साथ आम लोगों के पास भी नदियों को लेकर सटीक जानकारी उपलब्ध हो सकेगी। आम लोग भी अपने जिलों की सारी नदियों के बारे में भी पूरी जानकारी ले सकेंगे।

एटलस में क्या रहेगा

नदियों के एटलस में नदियों को लेकर उनकी संपूर्ण भौगोलिक जानकारी रहेगी। इसके तहत नदी के नाम, उनके मार्ग और सहायक नदियों की जानकारी भी दी जाएगी। इसके अलावा नदी का उद्गम, मुहाना और जहां वह किसी अन्य नदी से मिलती है। नदी बेसिन और जल निकासी क्षेत्र की भी जानकारी रहेगी। इसके अलावा जल प्रवाह, नदी नेटवर्क, बांध और जल संसाधन परियोजनाएं उल्लिखित होंगी।

NATIONAL

Hindustan Page

प्रो. बुशरा को घनश्याम दास बिड़ला पुरस्कार

सम्मान

नई दिल्ली, प्रमुख संवाददाता। के के बिड़ला फाउंडेशन की ओर से वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए वर्ष 2025 का घनश्याम दास बिड़ला शोध पुरस्कार आईआईटी कानपुर में बायोलॉजिक साइंसेस एंड बायोइंजीनियरिंग की प्रोफेसर बुशरा अतीक को देने की घोषणा की गई है। इसके तहत पांच लाख रुपये की सम्मान राशि प्रदान की जाती है।

प्रोफेसर बुशरा, आईआईटी कानपुर की अंतरराष्ट्रीय संबंध की डीन हैं। प्रो. बुशरा कैंसर रिसर्च (कैंसर का दोबारा सक्रिय या उभरकर सामने आना) विशेष रूप से प्रोस्टेट कैंसर के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए जानी जाती हैं। इस पुरस्कार की अनूठी बात यह है कि इसके लिए चयन उन भारतीय वैज्ञानिकों का किया जाता है, जिनकी आयु 50 वर्ष या उससे कम है और जिन्होंने विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कैंसर रोगियों के लिए सहायक हुआ शोध : बुशरा अतीक का शोध कैंसर रोगियों के इलाज में सहायक सिद्ध हुआ है। वह एक बायोमेडिकल अनुसंधान कार्यक्रम का नेतृत्व करती हैं। इसका उद्देश्य कैंसर रोगियों के लिए अगली पीढ़ी के निदान व उपचारात्मक रणनीतियों का विकास करना है।

प्रोफेसर बुशरा के शोध ने विशेष रूप से प्रोस्टेट और कोलोरेक्टल कैंसर में उपचार की रूपरेखाओं को परिभाषित किया है। उन्होंने दिखाया कि प्रयुक्त एंटी-एंड्रोजन दवाएं प्रोस्टेट कैंसर में हानिकारक हो सकती हैं। उनकी टीम ने प्रोस्टेट कैंसर रोगियों के उपसमूह में बढ़े एसपीआईएनके-1 स्तरों के पीछे की नई जैविक प्रक्रियाओं का खुलासा किया, एपिजेनेटिक दवाओं की संभावनाएं स्थापित कीं और डब्ल्यूएचओ की ओर से स्वीकृत एंटी-मलेरियल दवा आर्टेमिसिनिन को पुनः प्रयुक्त कर प्रतिरोधी कैंसर में संवेदनशीलता बहाल की।

- आईआईटी कानपुर में अंतरराष्ट्रीय संबंध की डीन हैं प्रोफेसर बुशरा अतीक
- प्रोस्टेट कैंसर के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए जानी जाती हैं

प्रो. अतीक की शैक्षणिक यात्रा बरेली से शुरू हुई, जहां से उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। नई दिल्ली स्थित एम्स और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इम्यूनोलॉजी में शोध नियुक्तियों के बाद उन्होंने मॉन्ट्रियल स्थित मैकगिल विश्वविद्यालय में पोस्ट डॉक्टरल अध्ययन किया और इसके बाद अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन में कार्य किया। 2013 में वह आईआईटी कानपुर में सहायक प्रोफेसर के रूप में शामिल हुईं। बुशरा को शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार, यूनेस्को टीडब्ल्यूएएस पुरस्कार सहित कई पुरस्कार प्राप्त हैं।

'शक्तिबाण' रेजिमेंट का गठन होगा

- सेना अपनी ड्रोन युद्ध क्षमता को मजबूत करने की तैयारी में
- दुश्मन की हरकतों की निगरानी कर सटीक वार करना उद्देश्य

15 से 20 'शक्तिबाण' रेजिमेंट का गठन कर रही है सेना

05 से 500 किमी तक लक्ष्यों पर हमला करने में होंगे सक्षम

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय सेना अपनी ड्रोन युद्ध क्षमता को मजबूत करने की दिशा में बड़े कदम के तहत 15 से 20 'शक्तिबाण' रेजिमेंट का गठन कर रही है। रक्षा अधिकारियों ने यह जानकारी दी है।

इन रेजिमेंटों को स्वार्म ड्रोन, लोइटरिंग म्यूनिशन और लंबी दूरी के मानव रहित विमान (यूएवी) से लैस किया जाएगा। यह 5 किलोमीटर से लेकर 500 किलोमीटर तक के लक्ष्यों पर हमला करने में सक्षम होंगे। इनका उद्देश्य दुश्मन की हरकतों की रियल-टाइम निगरानी करना, सेकेंडों में लक्ष्य निर्धारित करना और बिना सैनिकों को खतरे में डाले सटीक वार करना। रक्षा अधिकारियों ने बताया कि शक्तिबाण रेजिमेंट भारतीय सेना की रेजिमेंट ऑफ आर्टिलरी का हिस्सा होंगी और शुरुआती यूनिट पहले ही चालू हो चुकी हैं। यह बड़ा सैन्य पुनर्गठन सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी की परिकल्पना है, जो आधुनिक युद्ध की चुनौतियों से निपटने के लिए सेना के व्यापक बदलाव का हिस्सा है। अधिकारियों के अनुसार, शक्तिबाण रेजिमेंटों के गठन से सेना की 50 से 500 किलोमीटर की दूरी तक लक्ष्यों पर प्रहार करने की क्षमता में मौजूद अंतर को पाटने में मदद मिलेगी। 400–500 किलोमीटर से अधिक दूरी के लक्ष्यों के लिए भारतीय सेना की आर्टिलरी रेजिमेंट के पास पहले से ही ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलें मौजूद हैं, वहीं अब 120 किलोमीटर रेंज वाली पिनाका रॉकेट प्रणालियां भी शामिल की जा रही हैं।

पहली शक्तिबाण रेजिमेंट को सुसज्जित करने के लिए सेना जल्द ही फास्ट-ट्रैक प्रक्रिया के तहत ड्रोन की खरीद के लिए टेंडर जारी करेगी। सेना पहले ही एक लाख से अधिक ड्रोन ऑपरेटरों का एक पूल तैयार कर चुकी है और अब विभिन्न सैन्य संरचनाओं को आवश्यक हथियार प्रणालियों से लैस किया जा रहा है।

एशियाड चैंपियन धावक जॉनसन का संन्यास

नई दिल्ली, एजेंसी। एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता और भारतीय धावक जिन्सन जॉनसन ने बुधवार को संन्यास की घोषणा कर दी। उन्होंने कहा कि 15 वर्षों के करियर के बाद अब कुछ नया करने का समय आ गया है।

केरल के 34 वर्षीय एथलीट ने कहा कि उनका सफर 'मुश्किल ट्रेनिंग, संघर्षों और दर्दनाक चोटों से भरा रहा। जॉनसन ने करियर में सभी कोचों, साथी खिलाड़ियों, सरकार और भारतीय एथलेटिक्स महासंघ को मार्गदर्शन और सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

एशियाड के बाद नहीं खेले : जॉनसन ने अक्तूबर 2023 में होंग्झोउ एशियाई खेलों में 1500 मीटर में कांस्य पदक जीतने के बाद से किसी प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं लिया है। उनके करियर का सर्वश्रेष्ठ क्षण 2018 जकार्ता एशियाड खेलों में 1500 मीटर में तीन मिनट 44.72 सेकंड के समय से स्वर्ण जीतना रहा।

> पर्दे के पीछे अथक मेहनत करने वाले सभी लोगों का दिल से धन्यवाद जो दिखाई नहीं देते, लेकिन हमेशा महसूस होते हैं। हर दिन मुझे आगे बढ़ाने के लिए धन्यवाद। -जिन्सन जॉनसन

इन्हीं खेलों में उन्होंने 800 मीटर में रजत भी जीता था।

रिकॉर्ड भी तोड़े : जॉनसन ने 2018 में गुवाहाटी में राष्ट्रीय अंतर-राज्यीय चैंपियनशिप के दौरान एक मिनट 45.65 सेकंड का समय निकालकर महान एथलीट श्रीराम सिंह का 42 साल पुराना 800 मीटर राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा था। हालांकि यह रिकॉर्ड 2025 में मंजो. अफसाल ने तोड़ दिया।

गोल्ड कोस्ट 2018 राष्ट्रमंडल खेलों (ऑस्ट्रेलिया) में जॉनसन ने तीन मिनट 37.86 सेकंड का समय निकालकर बहादुर प्रसाद का 23 साल पुराना 1500 मीटर राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा। हालांकि वे फाइनल में पांचवें स्थान पर रहे थे।

फिर उन्होंने अपना रिकॉर्ड दो बार और सुधारा जिसमें 2019 में बर्लिन मीट में बना 3:35.24 सेकंड का समय उनका सर्वश्रेष्ठ रहा।

कोलकाता से शुरू हुआ सफर : जिन्सन जॉनसन ने कहा, मेरी यात्रा वर्ष 2007 में कोलकाता से शुरू हुई, जब हमने स्कूल नेशनल में पहला पदक जीता। तब मुझे नहीं पता था कि यह रास्ता मुझे कहां ले जाएगा। मुझे इतना पता था कि मैं भारत के लिए दौड़ना चाहता हूं।

तालिका में हरियाणा 60 पदकों के साथ शीर्ष पर

महाराष्ट्र ने 24 स्वर्ण, नौ रजत और नौ कांस्य के साथ दूसरा स्थान हासिल किया

राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 7 जनवरी।

राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता के समापन पर हरियाणा (60 पदक) ने राइफल, पिस्टल और शाटगन में शानदार प्रदर्शन कर पदक तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया। प्रतियोगिता की 45 स्पर्धाओं में 16,500 से अधिक निशानेबाजों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता नई दिल्ली और भोपाल में आयोजित की गई।

राष्ट्रीय चैंपियनशिप पदक तालिका में हरियाणा ने 31 स्वर्ण, 13 रजत और 16 कांस्य पदकों के साथ कुल 60 पदक जीतकर पहला स्थान प्राप्त किया। हरियाणा ने राइफल में 13 स्वर्ण, पिस्टल में 14 स्वर्ण और शाटगन स्पर्धाओं में चार स्वर्ण पदक जीते। वहीं, महाराष्ट्र ने 24 स्वर्ण, नौ रजत और नौ कांस्य पदकों के साथ दूसरा स्थान हासिल किया, जबकि राजस्थान 15 स्वर्ण, 15 रजत और 21 कांस्य पदकों के साथ कुल 51 पदक जीतकर तीसरे स्थान पर रहा।

हरियाणा की अमीरात अर्शद (बीच में)।

राष्ट्रीय चैंपियनशिप पदक तालिका में हरियाणा ने 31 स्वर्ण, 13 रजत और 16 कांस्य जीते। राइफल में 13 स्वर्ण, पिस्टल में 14 स्वर्ण और शाटगन स्पर्धाओं में चार स्वर्ण पदक हासिल किए। प्रतियोगिता की 45 स्पर्धाओं में 16,500 से अधिक निशानेबाजों ने भाग लिया।

अन्य राज्यों में मध्य प्रदेश 12 स्वर्ण पदकों के साथ पांचवें स्थान पर रहा, जबकि दिल्ली और कर्नाटक ने 11-11 स्वर्ण पदक जीते। उत्तर प्रदेश और आर्मी ने आठ-आठ स्वर्ण पदक हासिल किए, वहीं तमिलनाडु ने छह स्वर्ण पदकों के साथ शीर्ष दस में अपनी जगह बनाई। कुल 33 राज्यों और संस्थागत इकाइयों ने राष्ट्रीय चैंपियनशिप पदक तालिका में स्थान पाया और 473 पदक साझा किए।

पहल पत्रिका के संपादक रहे ज्ञानरंजन का निधन

Hindustan Page

जबलपुर, एजेंसी। प्रसिद्ध साहित्यकार और पहल पत्रिका के संपादक रह चुके ज्ञानरंजन का बुधवार देर रात करीब साढ़े दस बजे निधन हो गया। गत वर्ष 21 नवंबर को ज्ञानरंजन ने अपना 89वां जन्मदिन मनाया था।

मूलतः इलाहाबाद के रहनेवाले ज्ञानरंजन पिछले कुछ समय से बीमार थे। परिजनों ने उन्हें मंगलवार को जबलपुर स्थित मेट्रो अस्पताल में भर्ती कराया था। वे हृदय संबंधी रोग से ग्रसित थे। लेखन आदि कार्यों के साथ ही ज्ञानरंजन जबलपुर के जीएस कॉलेज में कई वर्षों तक अध्यापन भी किया था। ज्ञानरंजन की एक बेटी और बेटा शांतनु हैं। वे दोनों जबलपुर पहुंच चुके हैं। उनकी पत्नी का नाम सुनैना ज्ञानरंजन है। 'घंटा', 'पिता' और 'फेंस के इधर-उधर' ज्ञानरंजन की सर्वाधिक लोकप्रिय रचनाएं हैं। इन रचनाओं ने ज्ञानरंजन को नई ऊंचाई दी। उन्होंने साहित्यिक पत्रिका पहल ने कम समय में लोगों के बीच जगह बनाई। ज्ञानरंजन का जन्म 21 नवंबर, 1936 का हुआ था। उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का साहित्य भूषण सम्मान, अनिल कुमार और सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार, मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग का शिखर सम्मान, सुदीर्घ कथा साधना, सृजनशीलता के लिए वर्ष 2001-2002 के राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से सम्मानित किया गया।

'धुरंधर' सर्वाधिक कमाई करने वाली हिंदी फिल्म

रिकॉर्ड

831 करोड़ रुपये की कमाई देशभर में हुई बुधवार तक

मुंबई, एजेंसी। फिल्म निर्माता आदित्य धर की फिल्म 'धुरंधर' अब तक की सबसे अधिक कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बन गई है।

निर्माताओं ने बताया कि रणवीर सिंह अभिनीत इस फिल्म ने रिलीज के 33वें दिन मंगलवार को 5.70 करोड़ की कमाई की, जिसके बाद इसकी देशभर में कुल कमाई बढ़कर 831.40 करोड़ रुपये हो गई। इसके साथ ही यह अब तक की सभी हिंदी फिल्मों में पहले स्थान पर पहुंच गई।

इससे पहले शीर्ष स्थान पर अल्लू अर्जुन की वर्ष 2023 में आई फिल्म 'पुष्पा 2: द रूल' का हिंदी संस्करण रहा था, जिसने हिंदी में 830 करोड़ रुपये की कमाई की थी।

पुनरीक्षण नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री के आवास पर 16 जनवरी को होगी सुनवाई

चुनाव आयोग ने अमर्त्य सेन को तलब किया

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 7 जनवरी।

निर्वाचन आयोग ने बुधवार को पश्चिम बंगाल में जारी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के संबंध में नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन को नोटिस जारी किया है, जिसमें 92 वर्षीय अर्थशास्त्री को 16 जनवरी को उनके आवास पर सुनवाई के लिए बुलाया गया है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। तृणमूल कांग्रेस ने इस घटनाक्रम पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे 'शर्मनाक तमाशा' बताया।

अधिकारियों ने बताया कि सेन वर्तमान में विदेश में हैं, इसलिए नोटिस उनके पैतृक निवास, शांतिनिकेतन, बोलपुर में रह रहे उनके परिवार के एक सदस्य को दिया गया है। सेन को सुनवाई के लिए कई नोटिस दिए जाने के संबंध में स्पष्टीकरण देते हुए पश्चिम बंगाल के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) के कार्यालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, 'प्रोफेसर सेन को केवल एक ही नोटिस

बाकी पेज 8 पर

अमर्त्य सेन

पश्चिम बंगाल में बीएलओ की मौत

कोलकाता, 7 जनवरी (एजेंसी)।

पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में एक बूथ-स्तरीय अधिकारी की बुधवार को मौत हो गई। इस मामले में परिजन का आरोप है कि राज्य में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के कार्यभार के कारण वह तनाव में थीं।

-पूरी खबर पेज 18 पर

अमर्त्य सेन व उनकी माता की उम्र का अंतर 15 वर्ष से कम, भेजा गया नोटिस

राज्य ब्यूरो, जागरण • कोलकाता

निर्वाचन आयोग ने बुधवार को बंगाल में जारी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के संबंध में नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन को नोटिस जारी किया है, जिसमें 92 वर्षीय अर्थशास्त्री को 16 जनवरी को उनके आवास पर सुनवाई होगी। एक अधिकारी ने बताया कि प्रोफेसर सेन द्वारा प्रस्तुत गणना प्रपत्र में कुछ तार्किक विसंगतियां पाई गईं, जिसके कारण उन्हें सुनवाई के लिए उपस्थित रहने को कहा गया है। गणना प्रपत्र में दर्ज सेन और उनकी माता की उम्र का अंतर 15 वर्ष से कम पाया गया था।

अधिकारियों ने बताया कि सेन वर्तमान में विदेश में हैं, इसलिए संबंधित क्षेत्र के बूथ स्तरीय अधिकारी (बीएलओ) सौम्रत मुखर्जी के जरिये नोटिस उनके पैतृक निवास, शांतिनिकेतन, बोलपुर में रह रहे उनके परिवार के एक सदस्य को दिया गया है। बंगाल के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) के कार्यालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि चूंकि सेन 85 वर्ष से अधिक उम्र के हैं, इसलिए बीएलओ नियमों के अनुसार सुनवाई के लिए उनके आवास पर उनसे मिलने जाएंगे।

16 जनवरी को निजी आवास पर सुनवाई के लिए बुलाया गया

अमर्त्य सेन। फाइल

वहीं अर्थशास्त्री के रिश्तेदार शांतभानु सेन ने नोटिस मिलने की पुष्टि की और कहा कि उन्होंने वकील से सलाह मशवरा करने के बाद इसे लिया है। चुनाव आयोग तथ्यों में त्रुटियों के कारण एसआइआर की सुनवाई के लिए 94 लाख लोगों को नोटिस भेजने की प्रक्रिया बुधवार से शुरू कर दी।

आयोग के इशारे पर तमाशा : टीएमसी

सेन को नोटिस सौंपे जाने के बाद टीएमसी ने एक्स पर एक पोस्ट में आरोप लगाया कि एसआइआर भाजपा और निर्वाचन आयोग के इशारे पर किया गया एक घृणित और शर्मनाक तमाशा है। इस घटनाक्रम से पहले मंगलवार को तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और सांसद अभिषेक बनर्जी ने आरोप लगाया कि सेन जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों को एसआइआर नोटिस जारी करना बंगाल की जनता का अपमान करने के समान है।

Dainik Jagaran Page

टैरिफ के बावजूद जीडीपी में तेजी रहने का अनुमान

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। अमेरिकी टैरिफ के बावजूद चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 में भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर 7.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है। बुधवार को राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने 31 मार्च को समाप्त हो रहे वित्तीय वर्ष के लिए आर्थिक विकास दर का अग्रिम अनुमान जारी किया।

रिपोर्ट में कहा गया है कि सेवा क्षेत्र, निवेश में तेजी और स्थिर खपत के दम पर अर्थव्यवस्था के बेहतर प्रदर्शन करने की उम्मीद है। पूरे साल के दौरान जीडीपी 201.90 लाख करोड़ रुपये रहने की संभावना है। यह बीते वित्तीय वर्ष के 187.97 लाख करोड़ रुपये की तुलना में 7.4 प्रतिशत अधिक है। बीते वित्तीय वर्ष 2024-25 में देश की जीडीपी में वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत रही थी। इस हिसाब से बीते वित्तीय वर्ष के मुकाबले चालू वित्तीय वर्ष में जीडीपी 0.9 प्रतिशत अधिक रहने का अनुमान है। चालू वित्तीय वर्ष में लोक प्रशासन, रक्षा एवं अन्य सेवा, वित्तीय, रियल एस्टेट एवं पेशेवर सेवाओं की वृद्धि दर 9.9 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया गया है। इसके बाद व्यापार, होटल, परिवहन, संचार एवं प्रसारण सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर 7.5 प्रतिशत रहने की उम्मीद है।

रोजगार और नौकरी के मौके

ऊंची जीडीपी दर का मतलब है कि अर्थव्यवस्था में तेजी आएगी। इससे नई नौकरियां उत्पन्न होंगी, खासकर निर्माण, मैन्युफैक्चरिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर, आईटी और सेवा क्षेत्र में। वेतन वृद्धि बेहतर हो सकती है।

जीडीपी के प्रमुख अनुमान

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय	7.4
भारतीय रिजर्व बैंक	7.3
अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष	6.6
गोल्डमैन सैक्स	6.7
विश्व बैंक	6.5
एसएंडपी	6.5

■ अनुमान प्रतिशत में

अगले वित्त वर्ष में वृद्धि दर 6.8% रहने का अनुमान

विदेशी ब्रोकरेज कंपनी गोल्डमैन शैक्स ने वित्त वर्ष 2026-27 में भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर के 6.8 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने

डेटा सुरक्षा उल्लंघन मामले पर आरबीआइ, केंद्र से मांगा जवाब

नई दिल्ली, 7 जनवरी (भाषा)।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने निजता एवं डेटा संरक्षण के अधिकार के उल्लंघन से जुड़ी जनहित याचिका पर केंद्र सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक से बुधवार को जवाब तलब किया। याचिका में आरोप लगाया गया है कि गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) द्वारा डिजिटल ऋण एप के माध्यम से उधारकर्ता के निजता और डेटा संरक्षण के अधिकार का उल्लंघन किया गया है।

मुख्य न्यायाधीश डीके उपाध्याय और न्यायमूर्ति तेजस करिया की पीठ ने पाया कि हिमाक्षी भार्गव द्वारा दायर जनहित याचिका में 'गंभीर चिंताएं' उठाई गई हैं और इस मामले में केंद्र तथा आरबीआइ को नोटिस जारी किया। पीठ ने कहा कि हम आपके द्वारा की जा रही कार्रवाई को लेकर चिंतित हैं। अदालत ने कहा कि हम आरबीआइ से याचिका में लगाए गए आरोपों और 2025 (डिजिटल ऋण) दिशानिर्देशों के प्रवर्तन के लिए की गई कार्रवाई के संबंध में एक हलफनामा दाखिल करने का निर्देश देते हैं। आरबीआइ द्वारा दाखिल किए गए हलफनामे में इन निर्देशों के उल्लंघन के मामले में संबंधित अधिकारियों द्वारा की गई कार्रवाई का विवरण होना चाहिए। याचिकाकर्ता ने अधिवक्ता कुणाल मदन और मनवे सरवागी के माध्यम से जनहित याचिका दायर की है। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता युगल जैन और टीना भी उपस्थित रहे। याचिका में आरोप लगाया कि भारतीय रिजर्व बैंक के 2025 के डिजिटल ऋण दिशानिर्देश जारी होने के बावजूद कुछ डिजिटल ऋण देने वाले 'एप' प्रतिबंधित मोबाइल फोन संसाधनों जैसे संपर्क सूचियों और 'काल लाग' तक पहुंच हासिल कर लेते हैं। अत्यधिक व्यक्तिगत और उपकरण-स्तरीय डेटा एकत्र करते हैं और जबरन सहमति मांगने वाले तंत्र का इस्तेमाल करते हैं। जनहित अर्जिका में तर्क दिया कि उधारकर्ताओं को सेवाओं का लाभ उठाने की शर्त के रूप में व्यापक और गोपनीय नीतियों को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जाता है जिससे सहमति अनैच्छिक हो जाती है ।

Jansatta Page.

कृषि सचिव देवेश चतुर्वेदी ने कहा

फरवरी में बीज विधेयक हो सकता है पेश

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 7 जनवरी।

कृषि सचिव देवेश चतुर्वेदी ने कहा कि सरकार ने बजट सत्र के पहले चरण में फरवरी में संसद में बीज विधेयक 2025 पेश करने का लक्ष्य रखा है।

उन्होंने एक समाचार एजंसी से कहा, हमें बीज विधेयक 2025 के लिए सुझावों सहित 9000 आवेदन प्राप्त हुए हैं। इन पर विचार करने के बाद 'कैबिनेट नोट' में इन्हें शामिल किया जाएगा। उन्होंने कहा, हमारा लक्ष्य इस विधेयक को बजट सत्र के पहले चरण में पेश करना है। सचिव ने कहा कि मंत्रालय, संसद के अवकाश के बाद कीटनाशक प्रबंधन विधेयक 2020 को पेश करने की योजना बना रहा है। बीज विधेयक, 1966 के बीज अधिनियम का स्थान लेगा। इसमें गुणवत्ता और पैकेट पर क्यूआर कोड जैसे आधुनिक मानकों के साथ 'ट्रेसबिलिटी' सुनिश्चित करने के लिए बीज किस्मों, डीलर और उत्पादकों के लिए अनिवार्य पंजीकरण का प्रावधान है। इसमें निगरानी के लिए केंद्रीय एवं राज्य बीज समितियों की स्थापना का भी प्रावधान है।

> *सचिव* ने एक समाचार एजंसी से कहा, हमें बीज विधेयक 2025 के लिए सुझावों सहित 9000 आवेदन प्राप्त हुए हैं। इन पर विचार करने के बाद 'कैबिनेट नोट' में इन्हें शामिल किया जाएगा।

जीविका दीदियों की बढ़ सकती है कमाई

नई दिल्ली : ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था को नई रफ्तार देने और महिलाओं की आमदनी बढ़ाने की दिशा में केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय और डाक विभाग के बीच बुधवार को एक करार हुआ है, जिससे देश की करीब 12 करोड़ जीविका दीदियों की कमाई हर महीने 15- 30 हजार रुपये तक की बढ़ोतरी का रास्ता खुलेगा। (पेज-3)

सुप्रीम कोर्ट ने न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के महाभियोग की प्रक्रिया पर संदेह जताया

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 7 जनवरी।

सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के महाभियोग की प्रक्रिया पर संदेह जताया। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति एससी शर्मा की पीठ ने कहा-सवाल यह है कि क्या राज्यसभा द्वारा प्रस्ताव खारिज करने पर लोकसभा की कार्यवाही भी खत्म हो जाएगी। न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा ने लोकसभा अध्यक्ष के जांच कमेटी बनाने के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। उन्होंने तर्क दिया है कि राज्यसभा और लोकसभा के बीच सलाह मशविरा नहीं हुआ है।

बकौल न्यायमूर्ति वर्मा लोकसभा सचिवालय का कहना है कि राज्यसभा ने प्रस्ताव स्वीकार ही नहीं किया है। इसलिए पुरानी व्यवस्था लागू नहीं होती है। अदालत इस मामले की गहराई से जांच कर रही है। इसमें जजों की जांच से जुड़े कानून की बारीकियों को समझा जा रहा है। यह फैसला भविष्य में महाभियोग की प्रक्रियाओं के लिए बड़ा उदाहरण बनेगा। न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के वकील मुकुल रोहतगी ने अदालत में कड़ी दलीलें पेश की। उन्होंने कहा कि महाभियोग की प्रक्रिया में नियमों का पालन नहीं हुआ है। जजेस इंक्वायरी एक्ट की धारा 3 के तहत एक खास प्रावधान दिया गया है। इसके अनुसार अगर दोनों सदनों में प्रस्ताव आता है, तो संयुक्त परामर्श जरूरी है।

रोहतगी का कहना है कि लोकसभा अध्यक्ष ने राज्यसभा सभापति के फैसले का इंतजार नहीं किया। उन्होंने एकतरफा तरीके से तीन सदस्यों की जांच कमेटी बना दी। वकील ने इसे कानून का उल्लंघन और प्रक्रिया की बड़ी चूक बताया है। अगस्त 2025 में राज्यसभा के उप सभापति ने इस प्रस्ताव को खारिज कर दिया था।

'लोकसभा में जांच समिति बनाना कानून के विरुद्ध'

नोट बरामदगी

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। शीर्ष कोर्ट में महाभियोग का सामना कर रहे इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज जस्टिस यशवंत वर्मा की ओर से दाखिल याचिका पर सुनवाई हुई।

जस्टिस यशवंत वर्मा की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी ने लोकसभा अध्यक्ष द्वारा जांच समिति के गठन का विरोध किया। पीठ के समक्ष पक्ष रखते हुए मुकुल रोहतगी ने पीठ से कहा कि इस समिति का गठन संविधान के अनुच्छेद 124, 217 और 218 का उल्लंघन होने के साथ-साथ न्यायाधीशों (जांच) अधिनियम, 1968 के तहत कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के खिलाफ है।

संयुक्त समिति बननी चाहिए: रोहतगी ने कहा कि यदि लोकसभा और राज्यसभा में एक ही दिन महाभियोग प्रस्ताव लाए जाते हैं, तो जांच समिति दोनों सदनों द्वारा संयुक्त रूप से गठित की जानी चाहिए।

वरिष्ठ अधिवक्ता के तर्क से सहमत नहीं: जस्टिस दत्ता ने कहा कि स्पष्ट कर दें कि हम वरिष्ठ अधिवक्ता रोहतगी के पहले और दूसरे (जांच पैनल के गठन और राज्यसभा के उपसभापति द्वारा प्रस्ताव खारिज करने की कार्रवाई) तर्क पर सहमत नहीं हैं... हमें बस यह देखना है कि क्या हमें अनुच्छेद-32 के तहत हस्तक्षेप करना चाहिए ताकि यह देखा जा सके कि क्या उस व्यक्ति (जस्टिस वर्मा) को संयुक्त समिति (लोकसभा और राज्यसभा दोनों की) का लाभ मिलना चाहिए था।

दोनों सदनों में प्रस्ताव स्वीकार हो: वरिष्ठ अधिवक्ता रोहतगी ने कहा कि न्यायाधीशों की जांच अधिनियम की धारा 3(2) में यह साफ लिखा है कि कोई समिति तब तक गठित नहीं की जाएगी जब तक कि प्रस्ताव दोनों सदनों में स्वीकार नहीं कर लिए जाते। दोनों सदनों में प्रस्ताव स्वीकार होने पर समिति का गठन दोनों सदनों द्वारा किया जाएगा।

यह है मामला

दिल्ली हाईकोर्ट के तत्कालीन जज जस्टिस यशवंत वर्मा के अधिकारिक आवास में 14 मार्च की रात को स्टोररूम में आग लगने के बाद दमकल और पुलिसकर्मियों ने बड़े पैमाने पर जले हुए नोटों के बंडल बरामद करने का दावा किया था। इस मामले की जांच के लिए देश के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) ने 3 अलग-अलग हाईकोर्ट के जजों की समिति ने गठित की थी और समिति ने आरोपों की पुष्टि करते हुए जस्टिस वर्मा के खिलाफ महाभियोग चलाने की सिफारिश की थी। इसके बाद इस मामले में संसद में जस्टिस वर्मा के खिलाफ महाभियोग का प्रस्ताव दिया गया था। इसके बाद संसदीय समिति गठित की गई थी।

अधिनियम में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया: शीर्ष कोर्ट

पीठ ने कहा कि अधिनियम में स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा गया कि यदि एक सदन प्रस्ताव खारिज कर देता है, तो दूसरे सदन को आगे बढ़ने से रोक दिया जाएगा। जस्टिस दत्ता ने कहा कि अगर राज्यसभा प्रस्ताव खारिज कर देता है, तो लोकसभा को समिति नियुक्त करने के प्रावधान के तहत क्या रोक है?

उपसभापति कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं: जस्टिस दत्ता ने कहा कि चूंकि राज्यसभा के सभापति ने इस्तीफा दे दिया, इसलिए उपसभापति ने अपने आप पद संभाल लिया। इस पर वरिष्ठ अधिवक्ता रोहतगी ने जवाब दिया कि उपसभापति सिर्फ सदन में कार्यवाही की अध्यक्षता करने के लिए पद संभालेंगे। इससे असहमति जताते हुए जस्टिस दत्ता ने कहा कि उपसभापति 'कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं।

जनगणना का पहला चरण अप्रैल से

नई दिल्ली। देश में पहले चरण की जनगणना के तहत घरों की सूची बनाने का काम सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में इस साल 1 अप्रैल से 30 सितंबर 2026 के बीच होगा। राज्यों, केंद्र शासित प्रदेश द्वारा निर्धारित 30 दिनों की अवधि में यह काम किया जाएगा। गृह मंत्रालय ने बुधवार अधिसूचना जारी कर ये जानकारी दी। गृह मंत्रालय की अधिसूचना के अनुसार, मकान सूचीकरण के 30 दिवसीय अभियान से पहले 15 दिनों की अवधि में स्व-गणना का विकल्प मिलेगा।

चुनाव प्रबंधन सम्मेलन भारत में होगा

- पहला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन दिल्ली में 21 से होगा
- 80 से अधिक देशों को आमंत्रित किया गया

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। भारत के निर्वाचन आयोग ने बुधवार को कहा कि वह 'लोकतंत्र और चुनाव प्रबंधन' आईआईसीडीईएम पर होने वाले पहले अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी करेगा। आयोग ने कहा कि दिल्ली स्थित भारत मंडपम में 21 से 23 जनवरी के बीच पहले आईआईसीडीईएम 2026 का आयोजन होगा।

भारत अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र और चुनाव प्रबंधन संस्थान के महानिदेशक राकेश वर्मा ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आईआईसीडीईएम 2026 चुनाव प्रबंधन और लोकतंत्र के क्षेत्र में भारत द्वारा आयोजित अपनी तरह का सबसे बड़ा वैश्विक सम्मेलन होगा। उन्होंने कहा कि इसमें दुनिया भर के चुनाव प्रबंधन निकायों (ईएमबीएस) का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 100 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि, साथ ही अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, भारत में विदेशी मिशनों और चुनाव के क्षेत्र में अकादमिक और अध्यास करने वाले विशेषज्ञों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। आईआईआईडीईएम के महानिदेशक वर्मा ने बताया कि यह सम्मेलन भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आईडीईए के सदस्य देशों की परिषद की अध्यक्षता ग्रहण करने पर निर्धारित एजेंडे को आगे बढ़ाएगा, जो 'एक समावेशी, शांतिपूर्ण, लचीले और टिकाऊ दुनिया के लिए लोकतंत्र' विषय पर आधारित है। उ

वर्मा ने कहा कि हमने इस सम्मेलन में 80 से अधिक देशों को आमंत्रित किया है। 45 चुनाव निकाय इस सम्मेलन में भाग ले रहे हैं। 2026 के आधिकारिक 'लोगो' भी जारी किया।

तीन दिवसीय सम्मेलन में ईएमबीएस के प्रमुखों और अन्य अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों के साथ 40 से अधिक द्विपक्षीय बैठकें करेगा। कॉन्फ्रेंस में 4 आईआईटी, 6 आईआईएम, 12 एनएलयू शामिल होंगे।

वेनेजुएला संकट को लेकर भारत चिंतित, हमारे उससे अच्छे संबंध: जयशंकर

- विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा- भारत वेनेजुएलावासियों की भलाई चाहता है
- अमेरिका की हालिया कार्रवाई के बाद भारत का पहला कड़ा सार्वजनिक बयान

लक्जमबर्ग सिटी, एएनआइ : विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मंगलवार (स्थानीय समय) को कहा कि भारत वेनेजुएला में हालिया घटनाक्रम को लेकर चिंतित है। यह दक्षिण अमेरिकी देश में अमेरिकी कार्रवाइयों के बाद भारत की ओर से पहला कड़ा सार्वजनिक बयान है।

भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा, "हां, हम वेनेजुएला के घटनाक्रम को लेकर चिंतित हैं। हम सभी पक्षों से आग्रह करेंगे कि वे बैठें और वेनेजुएला के लोगों की भलाई और सुरक्षा की स्थिति पर आएं। हम वेनेजुएला को एक ऐसा देश बनाना चाहेंगे, जिसके साथ कई वर्षों से हमारे बहुत अच्छे संबंध रहे हैं, इसलिए चाहते हैं कि लोग अच्छा व्यवहार करें।" उन्होंने लक्जमबर्ग के उप प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री जेविएर बेटेल के साथ अपनी बैठक के मौके पर यह टिप्पणी की।

एस जयशंकर। फाइल

वहीं, जयशंकर ने भारतीय समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत के दौरान पश्चिमी पाखंड पर कटाक्ष किया जो मई 2025 में आपरेशन सिंदूर के दौरान प्रदर्शित हुआ था। जयशंकर ने कहा कि जो देश मीलों दूर हैं वे कहते हैं कि तनाव होने पर वे चिंतित हो जाते हैं, लेकिन अपने अंदर झांकने से इन्कार करते हैं कि उनके अपने क्षेत्र में क्या जोखिम हैं।

भारतीय विदेश मंत्री ने कहा, "इसलिए जो लोग हमारे साथ काम करने और मददगार, सकारात्मक होने के इच्छुक हैं, हमें उनसे उसी तरह व्यवहार करना होगा। वहीं, जो उस तरह की हरकतें करते हैं जो पाकिस्तान करता है, हमें उनसे अलग तरीके से निपटना होगा।'

रक्षा मंत्रालय की संसदीय समिति करेगी रामलला के दर्शन, राहुल भी हैं सदस्य

रमाशरण अवस्थी • जागरण

32 सदस्यीय है समिति, 23 को पहुंच रही है रामनगरी

अयोध्या : रक्षा मंत्रालय की 32 सदस्यीय संसदीय समिति 23 जनवरी को रामनगरी पहुंच रही है। इस समिति में शामिल सांसद अयोध्या यात्रा के दौरान रामलला के दर्शन करेंगे और अपनी जिम्मेदारियों के अनुरूप कैंट क्षेत्र का भ्रमण करेंगे। इस संसदीय दल के अध्यक्ष राधामोहन सिंह हैं। इस समिति में कांग्रेस नेता राहुल गांधी भी शामिल हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि इस समिति में शामिल होकर राहुल गांधी रामलला के दर्शन करेंगे या नहीं।

राहुल गांधी अभी तक रामलला के दर्शन को नहीं आए हैं। 22 जनवरी 2024 को रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह का आमंत्रण सोनिया गांधी और राहुल गांधी को भी भेजा गया था, किंतु तब कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने रामलला से दूरी बनाए रखी थी। यद्यपि इक्का-दुक्का शीर्ष स्तर के कांग्रेस नेता रामलला के दर्शन करने आते रहे हैं।

भव्य राममंदिर में विराजे रामलला।

वेनेजुएला में सात दिन राष्ट्रीय शोक

कराकस। वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज ने कराकस में अमेरिकी सैन्य कार्रवाई के दौरान हुई मौतों के बाद देश में सात दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि यह शोक उन लोगों के सम्मान में है, जिन्होंने वेनेजुएला और राष्ट्रपति की रक्षा करते हुए अपनी जान गंवाई।

रोड्रिगेज ने कहा, हमारे देश में कोई युद्ध नहीं है, लेकिन हम पर हमला किया गया। उन्होंने अमेरिका की हिरासत में रखे गए मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया फ्लोरेस की वापसी की भी मांग की।

INTERNATIONAL

आईसीसी की दो टूक-बांग्लादेश को भारत में ही खेलने होंगे मैच

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश को आगामी टी-20 विश्व कप के निर्धारित मुकाबले भारत में ही खेलने होंगे। सूत्रों के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने आयोजन स्थल में बदलाव की उसकी मांग अस्वीकार कर दी है। हालांकि, बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने बुधवार को उन रिपोर्ट को खारिज कर दिया, जिनमें कहा गया था कि आईसीसी ने उसे या तो निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार खेलने या भारत में होने वाले अपने मैचों के अंक गंवाने के लिए तैयार रहने को कहा है। इस मामले में बीसीबी ने बयान जारी कर रहा है कि वे मीडिया रिपोर्ट बिल्कुल निराधार हैं, जिनमें दावा किया गया है कि उसे भारत में खेलने को लेकर अल्टीमेटम जारी किया गया है। हालांकि, बीसीबी ने कहा कि भारत और श्रीलंका में होने वाले टी-20 विश्व कप में उसकी टीम की भागीदारी से संबंधित चिंताओं को दूर करने के लिए उसने संबंधित पक्षों के साथ काम करने की इच्छा व्यक्त की है।

'आईसीसी सुरक्षा चिंता पर विचार करेगी'

बीसीबी ने बयान में कहा कि भारत में बांग्लादेशी टीम की सुरक्षा को लेकर उसकी चिंताओं पर आईसीसी ने प्रतिक्रिया दी है। मामले में आईसीसी ने बीसीबी के साथ मिलकर काम करने की इच्छा जताई है। आईसीसी ने आश्वासन दिया है कि बीसीबी के सुझावों पर विचार किया जाएगा।

आईसीसी के पास विकल्प

- तय कार्यक्रम और तय वेन्यू के अनुसार मैच कराने पर जोर
- मैच न खेलने पर वॉकओवर/पूरे अंक विरोधी टीम को देना
- नियम उल्लंघन पर अंक कटौती
- जुर्माना और रेवेन्यू शेयरिंग पर असर
- लगातार अवहेलना की स्थिति में टूर्नामेंट से बाहर करना
- सुरक्षा ऑडिट और अतिरिक्त प्रोटोकॉल के जरिये बैकडोर समाधान

बीसीबी के पास विकल्प

- सुरक्षा आश्वासन लेकर तय कार्यक्रम के अनुसार खेलना
- प्रतीकात्मक विरोध के साथ मैच खेल अंक सुरक्षित रखना
- खेलने से मना कर अंक गंवाने और कार्रवाई का जोखिम उठाना
- भविष्य के लिए आईसीसी व एसीसी में कूटनीतिक समर्थन जुटाना

भारत में खेलने हैं चार मैच: विश्व कप 7 फरवरी से शुरू होगा। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बांग्लादेश को अपने चार मैच कोलकाता और मुंबई में खेलने हैं।

यह है मामला : बांग्लादेश के तेज गेंदबाज मुस्तफिजुर रहमान को बीसीसीआई के निर्देश पर आईपीएल से बाहर किए जाने के बाद भारत और बांग्लादेश के बीच तनाव बढ़ गया है।

हिट विकेट : बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड अपने ही जाल में उलझा

■ गौरव त्यागी

नई दिल्ली। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने विश्व कप न खेलने की धमकी देकर खुद को रणनीतिक जाल में उलझा लिया है।

उसने शुरुआत भावनात्मक फैसले से की मगर आईसीसी के रुख के बाद वह ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां से पीछे हटना जोखिम है और आगे बढ़ना मजबूरी। किसी भी प्रतियोगिता के लिए आईसीसी के स्पष्ट नियम हैं। प्रतियोगिता से पहले आईसीसी के 'पार्टिसिपेशन एग्रीमेंट' और 'इवेंट रेग्युलेशन' के तहत हर सदस्य बोर्ड यह स्वीकार करता है कि तय कार्यक्रम, तय वेन्यू और तय शर्तों के अनुसार उसे मैच खेलने होंगे। किसी टीम का एकतरफा तौर पर यह कहना कि वह मैच नहीं खेलेगी, तब तक मान्य नहीं होता, जब तक आईसीसी खुद उसे स्वीकृति न दे। नियमों की भाषा में इसे 'फेलियोर टू फुलफिल ए फिक्सचर' माना जाता है। इसके परिणाम सीधे और कठोर होते हैं- विरोधी टीम को पूरे अंक, संबंधित टीम को शून्य अंक और जरूरत पड़ने पर आगे की अनुशासनात्मक कार्रवाई। बांग्लादेश ने जब सुरक्षा का तर्क दिया, तो यह सवाल भी स्वाभाविक रूप से उठा कि अंतिम फैसला किसका होगा।

Hindustan Page

तनाव : वेनेजुएला से आ रहे रूसी तेल टैंकर को अमेरिका ने पकड़ा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका ने अटलांटिक महासागर में वेनेजुएला से जुड़े एक रूसी तेल टैंकर को जब्त कर लिया। इसके बाद अमेरिका और रूस के बीच तनाव और बढ़ गया है। अमेरिका का कहना है कि यह कार्रवाई वेनेजुएला पर लगाए गए तेल प्रतिबंधों के उल्लंघन के खिलाफ की गई है, जबकि रूस ने इसे अंतरराष्ट्रीय समुद्र क्षेत्र में की गई 'समुद्री डकैती' बताया।

अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार, मेरीनेरा नाम का यह टैंकर पहले बेला-1 के नाम से जाना जाता था और कैरेबियाई सागर में अमेरिकी नाकेबंदी से बच निकलने के बाद इसका नाम और झंडा बदल दिया गया था। अमेरिकी कोस्ट गार्ड ने इसे रोकने की कोशिश की थी, लेकिन पोत ने जांच से इनकार कर दिया। अब इसे आइसलैंड के पास अटलांटिक महासागर में अमेरिकी कोस्ट गार्ड और सेना ने मिलकर जब्त किया है।

अमेरिका के रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने कहा कि वेनेजुएला के प्रतिबंधित तेल के खिलाफ नाकेबंदी दुनिया में हर जगह लागू है। वहीं, ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि ब्रिटेन ने रूसी तेल टैंकर को जब्त करने की अमेरिकी कार्रवाई में सहयोग किया है। सूत्रों के अनुसार, अमेरिका ने वेनेजुएला से जुड़े एक और पोत एम सोफिया को भी रोका है। पनामा के झंडे वाला यह पोत तेल ढोने के काम में लाया जा रहा था। देखें P 21

अमेरिकी नौसैनिकों ने अटलांटिक महासागर में इसी जहाज को जब्त किया।

रूस ने कहा, पोत से हमारा संपर्क टूटा

रूस के परिवहन मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि अमेरिकी नौसैनिक बलों द्वारा हमारे पोत पर कब्जा करने के बाद उससे संपर्क पूरी तरह टूट गया है। वहीं, सत्तारूढ़ यूनाइटेड रशिया पार्टी के वरिष्ठ नेता आंद्रेई ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय समुद्र में किसी अन्य देश के झंडे वाले पोत को जब्त करना अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है।

'बांग्लादेश ने जेएफ-17 लड़ाकू विमान खरीदने में रुचि दिखाई है'

लाहौर, 7 जनवरी (भाषा)।

बांग्लादेश ने पाकिस्तान से जेएफ-17 थंडर लड़ाकू विमान खरीदने में रुचि दिखाई है। पाकिस्तानी सेना ने बुधवार को यह दावा किया। जेएफ-17 लड़ाकू विमान एक बहु-भूमिका वाला विमान है और इसे चीन तथा पाकिस्तान ने संयुक्त रूप से विकसित किया है। पाकिस्तानी सेना के मुताबिक, यह घटनाक्रम मंगलवार को इस्लामाबाद में बांग्लादेश वायुसेना के एअर चीफ मार्शल हसन महमूद खान और पाकिस्तान वायुसेना के एअर चीफ मार्शल जहीर अहमद बाबर सिद्धू के बीच हुई बैठक के दौरान सामने आया।

मस्क के 'ग्रोक' का एडिट इमेज फीचर विवाद में फंसा

एलन मस्क की कंपनी एक्सएआई के एआई चैटबॉट ग्रोक को लेकर दुनिया के कई देशों में चिंता बढ़ गई है। यूजर्स ग्रोक के इमेज एडिट फीचर का दुरुपयोग कर आपत्तिजनक और फर्जी तस्वीरें बना रहे हैं। इसके बाद भारत यूके, फ्रांस, मलेशिया ने नाराजगी जताई है व कंपनी से जवाब मांगा है। कंपनी ने लोगों की तस्वीरें हटाने को कहा है।

Hindustan Times

यहां से शुरू हुआ विवाद

- ग्रोक में एक एडिट इमेज (तस्वीर बदलने) वाला फीचर था
- कुछ लोगों ने इस फीचर का गलत इस्तेमाल किया
- एआई से फर्जी और अश्लील तस्वीरें बनवाई गईं
- यहां तक कि बच्चों से जुड़ी आपत्तिजनक इमेज भी सामने आईं

सरकारें क्यों नाराज हैं

अलग-अलग देशों का कहना है कि यह कानून का उल्लंघन है। इससे लोगों की सुरक्षा और निजता खतरे में पड़ती है। इसलिए कई देशों ने जांच शुरू की और कुछ ने कार्रवाई भी की।

GROK AI

यह पहली बार नहीं

यह पहली बार नहीं है जब ग्रोक पर सवाल उठे हों। इससे पहले गाजा-ईरान-पाकिस्तान संघर्ष जैसे संवेदनशील मुद्दों पर भ्रामक और पक्षपाती जवाब देने के आरोप लगे हैं। इससे सवाल उठता है कि मस्क किस तरह सुरक्षा को प्राथमिकता दे रहे हैं।

> जो कोई ग्रोक से गैर-कानूनी कंटेंट बनाएगा, उसे वही सजा मिलेगी जैसे खुद अपलोड करने पर मिलती है। -एलन मस्क

बिना रोक-टोक दुरुपयोग

यूजर्स ने ग्रोक से कहा कि वह बच्चों के आपत्तिजनक तस्वीरें बनाए। इसके बाद भारत में बच्चों से जुड़ी यौन शोषण सामग्री को लेकर चेतावनी दी गई। जहां ग्रोक ने बच्चों से जुड़े अश्लील कंटेंट को बनाने से मना कर दिया।

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ग्रोक मामले में कर रहा पड़ताल | विवाद | कृत्रिम मेधा जनित सामग्री से जुड़े मामले पर रपट दाखिल

आपत्तिजनक सामग्री को लेकर एक्स की मुश्किलें बढ़ीं

नई दिल्ली, 7 जनवरी (भाषा)।

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय आपत्तिजनक सामग्री तैयार करने में एआइ चैटबाट 'ग्रोक' के दुरुपयोग से जुड़े मामले में सरकार के कड़े निर्देश के बाद सोशल मीडिया मंच 'एक्स' की तरफ से दिए गए जवाब और कार्रवाई रपट की जांच कर रहा है। सूत्रों ने बुधवार को यह जानकारी दी।

अमेरिकी उद्योगपति एलन मस्क के स्वामित्व वाले सोशल मीडिया मंच एक्स को मंत्रालय ने विस्तारित समय देते हुए बुधवार शाम पांच बजे तक विस्तृत 'कार्रवाई रपट' (एटीआर) जमा करने को कहा था।

सूत्रों ने कहा कि एक्स ने अपना जवाब मंत्रालय को सौंप दिया है, जिसे फिलहाल इसकी पड़ताल की जा रही है। हालांकि, कंपनी की ओर से सरकार को दी गई जानकारी का विवरण तत्काल उपलब्ध नहीं हो सका है।

एक्स की रपट 'विस्तृत तो है, लेकिन पर्याप्त नही' है : सरकार

सरकार ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' से उसके एआइ चैटबाट 'ग्रोक' से जुड़े अश्लील सामग्री मामले में उठाए गए कदमों पर और विस्तृत जानकारी मांगी है। सूत्रों ने बुधवार को यह जानकारी दी। सूत्रों ने कहा कि एक्स की तरफ से इस मामले में दाखिल की गई कार्रवाई रपट विस्तृत होने के बावजूद पर्याप्त नहीं पाई गई है। अमेरिकी उद्योगपति एलन मस्क के स्वामित्व वाली सोशल मीडिया कंपनी ने महिलाओं की यौन प्रवृत्ति वाली और अश्लील तस्वीरें एवं वीडियो तैयार करने में ग्रोक एआइ के कथित दुरुपयोग को लेकर केंद्र सरकार के निर्देश के बाद मंत्रालय को अपना जवाब सौंपा था। हालांकि, सूत्रों ने कहा कि बुधवार को सौंपी गई एक्स की रपट 'विस्तृत तो है, लेकिन पर्याप्त नही' है। सूत्रों ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने एक्स से यह स्पष्ट करने को कहा है कि ग्रोक एआइ से जुड़े अश्लील और आपत्तिजनक सामग्री के खिलाफ अब तक क्या ठोस कार्रवाई की गई है और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए कौन-कौन से कदम उठाए जाएंगे।

सरकार ने एक्स को कड़े शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा था कि उसके कृत्रिम मेधा (एआइ) आधारित टूल 'ग्रोक' का दुरुपयोग कर महिलाओं और नाबालिगों की अश्लील, आपत्तिजनक और यौन प्रकृति की तस्वीरें एवं वीडियो तैयार किए जाने के साथ साझा किए जा रहे हैं। इसको ध्यान में रखते हुए मंत्रालय ने दो जनवरी को एक्स को तत्काल ऐसी सभी गैरकानूनी और अश्लील सामग्रियों को हटाने का निर्देश दिया था।

मंत्रालय ने अपने आदेश में एक्स से यह भी कहा था कि वह 72 घंटे के भीतर यह स्पष्ट करे कि ग्रोक एप के संदर्भ में कौन-कौन से तकनीकी और संगठनात्मक कदम उठाए गए हैं या उठाए जाने वाले हैं। इस मामले में एक्स के मुख्य अनुपालन अधिकारी की भूमिका एवं निगरानी और उल्लंघन करने वाली सामग्री, उपयोगकर्ताओं एवं खातों के खिलाफ की गई कार्रवाई के बारे में जानकारी देने को कहा गया था।

सूत्रों के मुताबिक, मंत्रालय ने यह भी रेखांकित किया कि ग्रोक एआइ का इस्तेमाल फर्जी खाते बनाकर महिलाओं की तस्वीरों एवं वीडियो को अपमानजनक और अश्लील ढंग से प्रसारित करने के लिए किया जा रहा है, जो मंच-स्तरीय सुरक्षा उपायों की गंभीर नाकामी को दर्शाता है।

ग्रीनलैंड पर कब्जे की तैयारी में जुटे डोनाल्ड ट्रंप

अमेरिकी राष्ट्रपति सैन्य उपयोग समेत विभिन्न विकल्पों पर कर रहे चर्चा

व्हाइट हाउस ने कहा, अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ग्रीनलैंड महत्वपूर्ण

वाशिंगटन, रायटर: अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ग्रीनलैंड पर कब्जे की तैयारी में जुट गए हैं। इसके लिए वह सेना के उपयोग और ग्रीनलैंड को खरीदने समेत विभिन्न विकल्पों पर चर्चा कर रहे हैं। ट्रंप रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण इस द्वीप पर नियंत्रण चाहते हैं। हालांकि उनके इस कदम का यूरोपीय देश विरोध कर रहे हैं। डेनमार्क के सांसद रासमुस जार्लोव ने कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का प्रशासन ग्रीनलैंड पर कब्जा करने के लिए एक सहयोगी देश के साथ लगभग युद्ध शुरू कर रहा है।

व्हाइट हाउस ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ग्रीनलैंड के अधिग्रहण के विकल्पों पर चर्चा कर रहे हैं। वह ग्रीनलैंड को अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा की प्राथमिकता के तौर पर देखते हैं। बयान के अनुसार, 'राष्ट्रपति और उनकी टीम इस महत्वपूर्ण विदेश नीति लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न विकल्पों पर चर्चा कर रहे हैं। इस प्रयास में यकीनन कमांडर-इन-चीफ के पास अमेरिकी सेना का उपयोग हमेशा एक विकल्प है।'

व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने बुधवार को कहा कि राष्ट्रपति और उनकी राष्ट्रीय सुरक्षा टीम ग्रीनलैंड को खरीदने पर सक्रिय रूप से चर्चा कर रहे हैं। जबकि डेनमार्क के नियंत्रण वाला ग्रीनलैंड लगातार यह कह रहा है कि वह अमेरिका का हिस्सा नहीं बनना चाहता है। प्रमुख यूरोपीय शक्तियों और कनाडा ने इस आर्कटिक क्षेत्र के लिए एकजुटता दिखाई है। राष्ट्रपति ट्रंप के इस कदम से अमेरिका के लंबे समय से सहयोगी डेनमार्क, यूरोप और नाटो में हड़कंप मचा है। इधर, फ्रांस और जर्मनी जैसे सहयोगी देश ग्रीनलैंड को लेकर अमेरिकी धमकी से निपटने की योजना पर काम कर रहे हैं।

डेनमार्क के सांसद ने कहा, सहयोगी देश के साथ युद्ध शुरू कर रहे ट्रंप

डोनाल्ड ट्रंप। फाइल

इस कारण यह द्वीप चाहते हैं ट्रंप

ट्रंप ने सोमवार को कहा था कि अमेरिका को राष्ट्रीय सुरक्षा कारणों से ग्रीनलैंड की जरूरत है। आर्कटिक क्षेत्र में रूस और चीन की उपस्थिति बढ़ रही है। यह रणनीतिक मामला है। ग्रीनलैंड हर जगह रूसी और चीनी जहाजों से घिरा हुआ है। डेनमार्क सुरक्षा करने में सक्षम नहीं होगा। ट्रंप ने पिछले साल भी ग्रीनलैंड पर अमेरिका के नियंत्रण की बात कही थी। बता दें कि डेनमार्क के नियंत्रण वाला ग्रीनलैंड यूरोप और उत्तरी अमेरिका के मध्य स्थित है। अमेरिका वहां बैलिस्टिक मिसाइल डिफेंस सिस्टम तैनात करना चाहता है।

विदेश मंत्री ने कही यह बात

आइएएनएस के अनुसार, अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने अपने देश के सांसदों से कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप वार्ता के जरिये ग्रीनलैंड हासिल करना चाहते हैं। व्हाइट हाउस का हालिया बयान किसी सैन्य कार्रवाई का संकेत नहीं है। ट्रंप ग्रीनलैंड पर कब्जा नहीं करना चाहते बल्कि उसे खरीदना चाहते हैं। शासन का उद्देश्य ग्रीनलैंड के भविष्य के लिए डेनमार्क पर वार्ता का दबाव डालना है।

वार्ता चाहते हैं डेनमार्क और ग्रीनलैंड

एपी के अनुसार, डेनमार्क और ग्रीनलैंड अमेरिकी विदेश मंत्री साथ वार्ता चाहते हैं। रूबियो ने बताया कि वह अगले हफ्ते डेनमार्क के अधिकारियों से भेंट करेंगे। इससे पूर्व डेनमार्क की पीएम मेट्टे फ्रेडरिकसन ने कहा था कि अमेरिका ने ग्रीनलैंड पर कब्जा किया तो इसका अर्थ नाटो का अंत होगा। फ्रांस, जर्मनी, इटली, पोलैंड, स्पेन व ब्रिटेन के नेताओं ने कहा, खनिज संपदा से संपन्न यह द्वीप यहां के लोगों का है। सिट्जरलैंड का कहना है कि ग्रीनलैंड की स्थिति में किसी भी बदलाव के लिए डेनमार्क और ग्रीनलैंड की सहमति जरूरी है।

वेनेजुएला पर दुनिया की आशंका हुई सच

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

वेनेजुएला पर दुनिया की वह आशंका सच हो गई है, जिसमें यह अंदेशा जताया गया है कि अमेरिका ने तेल भंडार के कारण इस देश पर कार्रवाई की। यह आशंका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के उस बयान से सही साबित हुई, जिसमें उन्होंने कहा,वेनेजुएला का अंतरिम प्रशासन अमेरिका को बाजार मूल्य पर तीन से पांच करोड़ बैरल उच्च गुणवत्ता वाला तेल मुहैया कराएगा।

एपी के मुताबिक, ट्रंप ने मंगलवार को अपने इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म ट्रूथ सोशल पर लिखा कि तेल जहाजों के जरिये सीधे अमेरिका पहुंचाया जाएगा। राष्ट्रपति के रूप में धन पर उनका नियंत्रण होगा, पर इसका उपयोग वेनेजुएला व अमेरिका के लोगों के लाभ के लिए किया जाएगा। इधर, अमेरिकी राष्ट्रपति भवन व्हाइट हाउस वेनेजुएला को लेकर तेल कंपनियों के अधिकारियों के साथ ओवल आफिस में शुक्रवार को बैठक करेगा। इसमें एक्सान, शेवरान और कोनोको फिलिप्स के प्रतिनिधियों के शामिल होने की संभावना है। रायटर के अनुसार, अमेरिकी ऊर्जा मंत्री क्रिस राइट ने बुधवार को कहा, अमेरिका को वेनेजुएला की तेल बिक्री और राजस्व को नियंत्रित करने की जरूरत है ताकि इस देश में बदलाव लाया जा सके। वह अमेरिकी तेल कंपनियों से बात कर रहे हैं। वह वेनेजुएला के तेल को अमेरिकी रिफाइनरियों को बेचना चाहते हैं।

- ट्रंप ने कहा, अमेरिका को तीन से पांच करोड़ बैरल तेल मुहैया कराएगा वेनेजुएला
- जहाजों से सीधे अमेरिका पहुंचेगा, राष्ट्रपति के रूप में धन पर मेरा नियंत्रण होगा
- ऊर्जा मंत्री बोले, अमेरिका को वेनेजुएला की तेल बिक्री को नियंत्रित करने की जरूरत
- वेनेजुएला को लेकर तेल कंपनियों के साथ शुक्रवार को व्हाइट हाउस में होगी बैठक

वेनेजुएला पर से कुछ प्रतिबंध हटाए जाएंगे ताकि यहां से दुनियाभर में तेल भेजा जा सके। विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने कहा, वेनेजुएला में स्थिरता लाने के लिए अमेरिका ने तीन चरणों वाली योजना तैयार की है। इससे पहले काराकास के अफसरों ने कहा,अमेरिकी कार्रवाई में वेनेजुएला के 24 सैनिकों की मौत हुई। अमेरिका ने शनिवार को वेनेजुएला पर हमला किया। वह राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी को पकड़कर न्यूयार्क ले आया था।

ट्रंप के कदम पर चीन ने जताई नाराजगी : वेनेजुएला से तेल अमेरिका भेजे जाने की घोषणा के बाद बुधवार को वैश्विक बाजार में तेल की कीमतों में गिरावट दर्ज की गई। जबकि चीन ने अमेरिका की इस घोषणा पर नाराजगी जताई और इसे धमकाने का कृत्य करार दिया।

भारत-इजरायल आतंकवाद पर साथ

संकल्प

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। भारत- इजरायल ने आतंकवाद के सभी रूपों एवं अभिव्यक्तियों के प्रति शून्य सहिष्णुता की नीति बरतने के दृष्टिकोण को दोहराया है। दोनों ने इस खतरे से लड़ने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है।

इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बुधवार को फोन पर बात की। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को गाजा शांति योजना की जानकारी भी दी। प्रधानमंत्री कार्यालय ने बयान जारी कर कहा कि दोनों नेताओं ने एक दूसरे को नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं और भारत तथा इजरायल के लोगों के लिए शांति और समृद्धि की कामना की। दोनों नेताओं ने साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, आपसी गहरे विश्वास और दूरदर्शी दृष्टिकोण

बेंजामिन नेतन्याहू ने पीएम नरेंद्र मोदी फोन पर बात की

के साथ इस वर्ष आगे भारत-इजरायल रणनीतिक साझेदारी व मजबूत करने के साझा प्राथमिकताओं की पहचान की। उन्होंने आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों के प्रति शून्य-सहिष्णुता बरतने का दृष्टिकोण दोहराया और इस खतरे से लड़ने की प्रतिबद्धता दोहराई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि उन्होंने आतंकवाद से और अधिक दृढ़ता के साथ लड़ने के अपने साझा संकल्प की पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि अपने मित्र प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से बात करके मुझे खुशी हुई।

छात्रों से बात करने को उत्सुक: मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को कहा कि वे परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम के तहत बच्चों अभिभावकों से बात को लेकर उत्सुक हैं।

बुधवार को एक्स पर पोस्ट में उन्होंने कहा वे परीक्षा में शामिल होने वाले छात्रों के सवालों और उनके तजुर्बे को सुनने को तैयार हैं। 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं करीब आ रही हैं। ऐसे में वे बच्चों, अभिभावकों से संवाद को तैयार हैं। मोदी ने एक्स पर कहा कि भारतीय तटरक्षक बल के बेड़े में प्रदूषण नियंत्रण पोत 'समुद्र प्रताप' के शामिल होने से आत्मनिर्भर भारत अभियान को बल मिला है।

EDITORIAL

हमारी सभ्यतागत चेतना का प्रतीक

ज्योतिरादित्य सिंधिया

सोमनाथ मंदिर की हजार वर्ष की यात्रा हमें सिखाती है कि स्मृतियां कभी मिटती नहीं और सच्ची आस्था कभी हारती नहीं

अवधेश राजपूत

सोमनाथ मंदिर के विध्वंस के एक हजार वर्ष पूर्ण होना हमें उस शाश्वत चेतना का स्मरण कराता है, जिसने सदियों से भारत के आत्मा को पोषित किया। सोमनाथ की यह यात्रा प्रमाण है कि हमारी सभ्यतागत चेतना वह 'अक्षयवट' है, जिसे कोई भी आक्रांता नष्ट नहीं कर सका। महमूद गजनवी द्वारा इस पवित्र मंदिर पर किया गया आक्रमण मात्र एक स्थापत्य संरचना पर आघात नहीं, बल्कि वह उस गौरवशाली सभ्यतागत पहचान को नष्ट करने का कुत्सित प्रयास था, जो युगों-युगों से इस पुण्यभूमि को भारत के रूप में परिभाषित करती आई है। वर्ष 1026 का वह घाव गहरा था, जिसने न केवल मंदिर की शिलाओं को खंडित किया, बल्कि राष्ट्रीय आत्मसम्मान को भी चुनौती दी थी। छत्रपति शिवाजी महाराज के हिंदवी स्वराज्य के संकल्प से लेकर ज्योतिर्लिंगों की मर्यादा की रक्षा तक, यह यात्रा निरंतर जारी रही। स्वराज की इस लौ को छत्रपति शिवाजी महाराज से लेकर मेरे पूर्वज महाराजा महादजी सिंधिया जैसे हजारों योद्धाओं ने अनवरत अपने शौर्य से जलाए रखा। इस ऐतिहासिक अन्याय के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिकार अठारहवीं शताब्दी में तब देखने को मिला, जब महाराजा महादजी सिंधिया की शक्ति ने भारत के स्वाभिमान को पुनर्जीवित किया। पानीपत के तृतीय युद्ध (1761) की भीषण त्रासदी के पश्चात, जब महादजी महाराज ने अपने परिवार के सोलह सदस्यों को खोया तो यह मराठाओं की शक्ति के अस्तित्व की कठोर परीक्षा थी। तब महादजी महाराज ने अदम्य धैर्य, निरंतर संघर्ष और दूरदर्शी रणनीति के बल पर 10 फरवरी, 1771 को दिल्ली के लालकिले पर मराठा-भगवा ध्वज फहराया। यह विजय मात्र एक नगर की प्राप्ति नहीं, बल्कि मराठा-सनातन स्वाभिमान और राजनीतिक प्रभुत्व की पुनः स्थापना का प्रतीक भी थी। वर्ष 1771 से 1803 तक दिल्ली पर सिंधिया वंश का नियंत्रण रहा।

वर्ष 1785 में महाराजा महादजी सिंधिया ने दिल्ली विजय के बाद लाहौर विजय अभियान आरंभ किया। उन्होंने सिखों के साथ रणनीतिक गठबंधन और स्थानीय समर्थन के बल पर सशक्त युद्धनीति अपनाई। 29 मई, 1785 को दिल्ली से भारी तोपखाने के साथ लाहौर की ओर कूच करते हुए उन्होंने अफगान गढ़ी को घेर लिया। जुलाई में हुए लगातार संघर्षों में अफगान सेनापति शाह गुलजार हुसैन, परवेज खान और अशरफ अली मारे गए। मानसून के बाद सितंबर में निर्णायक विजय मिली और मोहम्मद शाह अब्दाली को मराठाओं की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। इस विजय के साथ अटक से कटक तक और प्रयागराज से भरूच तक 'हिंदवी स्वराज्य' की सुदृढ़ और प्रतिष्ठित स्थापना हुई। 1785 का लाहौर युद्ध महाराजा महादजी सिंधिया की अद्वितीय सैन्य कुशलता का प्रमाण था, जिसने अफगान सेनाओं में भय उत्पन्न किया। उनके शासन में मराठा साम्राज्य अटक से कटक तथा भरूच से प्रयागराज तक विस्तृत हुआ और भगवा ध्वज सर्वत्र लहराया। इस बार लाहौर की धरती पर उन्होंने विजय पताका फहराई और अफगान सेनाओं को सिंधु के पार खदेड़ा। इस युद्ध में महादजी महाराजा ने सदियों पहले 1026 ईस्वी में सोमनाथ पर किए गए उस आघात का वह सभ्यतागत प्रतिशोध लिया, जिसने भारत के आत्मा पर गहरी चोट की थी।

महाराजा महादजी सिंधिया लाहौर में मोहम्मद शाह अब्दाली के महल से वे ऐतिहासिक चांदी के द्वार वापस लेकर आए, जिन्हें गजनवी सोमनाथ से लूटकर ले गया था। उन्होंने भारी सुरक्षा में उन द्वारों को सोमनाथ ज्योतिर्लिंग भेजने की व्यवस्था की, परंतु उन द्वारों के सोमनाथ पहुंचने पर पुजारियों का कहना था कि वर्षों तक विदेशी आक्रांताओं के अधीन रहने के कारण उन्हें पुनः स्थापित नहीं किया जाना चाहिए। इस पर महादजी महाराज ने उन्हें उज्जैन भेजा, जहां गोपाल मंदिर में उन द्वारों की प्रतिष्ठा की गई। 760 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद यह पहला अवसर था जब किसी भारतीय शासक ने सीमाओं के पार जाकर अपनी सांस्कृतिक विरासत को आक्रांताओं के चंगुल से वापस लाने का अदम्य साहस दिखाया। उन द्वारों का भारत लौटना 'सांस्कृतिक न्याय' की पुनर्स्थापना थी। 1234-1235 ईस्वी में इल्तुतमिश द्वारा ध्वस्त किए गए महाकाल मंदिर का 1734 में उज्जैन में महादजी महाराज के पिता महाराजा राणोजीराव सिंधिया द्वारा शून्य से पुनर्निर्माण कराया गया और आगे चलकर स्वयं महादजी महाराज ने उसे भव्यता एवं गौरव का स्वरूप प्रदान किया। यही वह वैचारिक भूमि थी, जिसने सोमनाथ के गौरव को सहेजने का आधार तैयार किया।

स्वतंत्रता के बाद सोमनाथ का पुनर्निर्माण आधुनिक भारत के आत्मविश्वास का प्रखर चेहरा बना। 12 नवंबर, 1947 को लौहपुरुष सरदार पटेल ने सोमनाथ के पुनरुद्धार का ऐतिहासिक संकल्प लिया। सोमनाथ ट्रस्ट के संस्थापकों के प्रयासों और भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद के सान्निध्य में 11 मई, 1951 को जब ज्योतिर्लिंग की प्राण-प्रतिष्ठा हुई, तो दुनिया ने देखा कि भारत अब अपनी सभ्यतागत जड़ों से विमुख नहीं होगा। सोमनाथ आंदोलन से प्रेरणा लेकर 1990 में राम-रथ यात्रा सोमनाथ से आरंभ हुई और 10,000 किलोमीटर की यात्रा तय करते हुए अयोध्या की ओर बढ़ी। इस ऐतिहासिक यात्रा के उद्घाटन में मेरी आजी अम्मा राजमाता विजयाराजे सिंधिया का योगदान भी रहा है, मानो इतिहास स्वयं अपनी निरंतरता को साक्षात अनुभव कर रहा हो।

सोमनाथ कारिडोर का निर्माण इस सत्य का साक्ष्य है कि हम अपनी आस्था के केंद्रों को न केवल सुरक्षित कर रहे हैं, बल्कि उन्हें दुनिया के सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक केंद्रों के रूप में प्रतिष्ठित भी कर रहे हैं। पिछले 11 वर्षों में सोमनाथ से लेकर राम जन्मभूमि तक जो कायाकल्प हुआ है, वह इस बात का प्रतीक है कि भारत अब अपनी सांस्कृतिक पहचान पर गर्व करने वाला एक आत्मविश्वास से परिपूर्ण राष्ट्र बन चुका है। सोमनाथ की यह एक हजार वर्ष की यात्रा हमें सिखाती है कि स्मृतियां कभी मिटती नहीं और सच्ची आस्था कभी हारती नहीं।

(लेखक केंद्रीय संचार एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री हैं)
response@jagran.com

Dainik Jagaran Page

कूटनीति में बौद्ध विरासत का उपयोग

लावण्या शिवशंकर

भारत का अपनी बौद्ध विरासत पर नियंत्रण रखना और स्वयं को उसका पालक दिखाना आवश्यक है

भगवान बौद्ध के पवित्र पिपरहवा अवशेष। फाइल

बीते दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दिल्ली में भगवान बुद्ध से संबंधित पिपरहवा पवित्र अवशेषों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेष केवल कलाकृतियां नहीं हैं। ये हमारी विरासत एवं सभ्यता का अभिन्न हिस्सा हैं और भारत इसका संरक्षक है। पिपरहवा अवशेषों को एक सदी से अधिक समय बाद देश वापस लाया गया है। भारत लाए जाने के बाद इन अवशेषों को रूस के कालिमकिया क्षेत्र में ले जाया गया, जहां 1.5 लाख से अधिक भक्तों ने उनका अवलोकन किया। इसके अलावा उन्हें भूटान, वियतनाम, कंबोडिया, थाईलैंड भी ले जाया गया। भारत से निकले असंख्य ज्ञानी भिक्षुओं के कारण बौद्ध धर्म दुनिया के अनेक देशों में प्रचलित और स्वीकार्य है। चूंकि दक्षिण पूर्वी एशिया में शासक आपसी संवाद में बौद्ध धर्म को बहुत महत्व देते थे, इसलिए विश्व सुलह और शांति के लिए बौद्ध धर्म का उपयोग स्वाभाविक है। वर्तमान एशिया में लगभग 45 करोड़ बौद्ध रहते हैं, जिसकी वजह से बौद्ध धर्म एक साफ्ट पावर है। भारत से ही बौद्ध धर्मावलंबी तिब्बत, चीन, जापान, कोरिया, श्रीलंका, थाईलैंड, लाओस और वियतनाम आदि गए। बौद्ध धर्म पर आधारित कूटनीति चलाना भारत के लिए नई बात नहीं है। मनमोहन सरकार ने नालंदा विश्वविद्यालय की नींव रखी थी। इस विश्वविद्यालय का एक उद्देश्य शास्त्रीय भाषा पाली का प्रचार-प्रसार करना और एशिया से छात्रों और शोधकर्ताओं को भारत आकर्षित करना भी है। बौद्ध धर्म का कूटनीतिक उपयोग मोदी सरकार का एक अंग बन गया है। इस संदर्भ में यह ठीक ही कहा गया है कि कि मोदी सरकार की नीति है-हिंदू संस्कृति, बौद्ध विरासत।

पिपरहवा अवशेषों की कहानी भी दिलचस्प है। 1898 में अमूल्य रत्न उत्तर प्रदेश के पिपरहवा में अंग्रेज जमींदार विलियम पेप को मौर्यकालीन स्तूप की खोदाई में मिले। उनके साथ कुछ अस्थि-अवशेष एक कलश में पाए गए, जिस पर प्राचीन ब्राह्मी में उत्कीर्ण था कि स्वयं भगवान बुद्ध के शाक्य कुल के सदस्यों ने इसे यहां रखा है। अंग्रेजों ने कुछ रत्न श्याम (प्राचीन थाईलैंड) के बौद्ध नरेश को उपहार में दिए, कुछ श्रीलंका और म्यांमार के बौद्ध मंदिरों में भेजे और एक हिस्सा कोलकाता के संग्रहालय में रखा और करीब 334 रत्नाभूषण जमींदार पेप ने अपने पास रखे। इन्हें बीते साल उनके वंशजों ने एक नीलामी घर सुथबीज को बोली लगाने के लिए सौंप दिया। केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने सुथबीज को नोटिस भेज नीलामी रुकवाई और गोदरेज समूह ने इस अमूल्य धरोहर को भारत लाने में आर्थिक योगदान दिया, पर हर देश ऐसा नहीं कर पाता।

कोरियाई युद्ध के बाद हजारों-हजार बौद्ध पुरावशेष चोर बाजार में हाथों-हाथ बिके। कोरिया में बौद्ध धर्म का सबसे तेजी से ह्रास हुआ है, पर अपने आसपास के बौद्ध देशों से मैत्रीपूर्ण संबंध रखने के लिए बड़े पैमाने पर वहां बौद्ध गोष्ठियां होती हैं। कभी चोल साम्राज्य और तदनंतर भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव में रहे दक्षिण-पूर्वी एशिया देशों की हमने उपेक्षा की। इसका फायदा पहले पश्चिमी देशों और फिर चीन ने उठाया। 2000 में मीकांग-गंगा कोआपरेशन के तहत भारत ने पांच आसियान देशों कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, थाईलैंड और वियतनाम के पर्यटन, संस्कृति, शिक्षा के साथ-साथ परिवहन और संचार क्षेत्र में सहयोग की पहल की।

आज ब्रिटेन, जर्मनी और अमेरिका में कई संसाधनसंपन्न विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म और पाली के पठन-पाठन के माध्यम से अपने राजनीतिक हित पूरे कर रहे हैं। इससे बौद्ध धर्म के अध्ययन में अप्रासंगिक त्रुटियां घर कर जाने का खतरा है, जो चिंताजनक है। हमें यह समझना चाहिए कि दक्षिण-पूर्वी एशिया में बौद्ध धर्म पालन और संरक्षण में हमारी स्वाभाविक और निर्णायक भूमिका है। हम इसकी अनदेखी नहीं कर सकते कि अफगानिस्तान और पाकिस्तान की गांधार सभ्यता और उसकी शैव और बौद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत भारत की है। अपने बौद्ध स्थलों का हवाला देते हुए कुछ समय पहले पाकिस्तानी राजदूत नबील मुनीर ने कहा था कि बौद्ध धर्म पाकिस्तान से कोरिया गया और वहां प्रचलित महायान बौद्ध धर्म का उद्भव भी पाकिस्तान में ही हुआ। भारत अगर पाकिस्तान की ऐसी कुटिलता का प्रत्युत्तर नहीं देगा और बौद्ध धर्म को हिंदू धर्म नामक वृक्ष की ही एक डाली नहीं कहेगा, तो पाकिस्तान हमारी अनमोल विरासत को हथिया सकता है। बौद्ध धर्म का सर्वेसर्वा बनने के लिए चीन भी हाथ-पांव मार रहा है। दरअसल जब भारत अपना भविष्य यूरोप और अमेरिका में देख रहा था, तब बौद्ध धर्म के सहारे चीन एशिया में अपने पांव जमा रहा था।

भारत को आज ज्यादा से ज्यादा मित्र राष्ट्रों की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति में बौद्ध धर्म पर आधारित कूटनीति बहुत कारगर हो सकती है। इसका भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए, ताकि हम वैश्विक स्तर पर बौद्ध धर्म से प्रभावित जनता की सद्भावना आकर्षित कर सकें। भारत का अपनी बौद्ध विरासत पर नियंत्रण रखना और स्वयं को उसका पोषक दिखाना आवश्यक हो चुका है। आज विश्व दो धुरियों में विभाजित है। एक अमेरिका और दूसरा चीन के नेतृत्व में। सर्वस्वीकार्य तीसरा ध्रुव बनने के लिए हमें हिंदुत्व और बौद्ध धर्म का समान प्रतिनिधित्व करना होगा। हमें अपने विमर्श और आख्यान का नियंत्रण अपने हाथ में लेना होगा।

(लेखिका रिसर्च स्कालर हैं)
response@jagran.com

मंथन

स्कूली शिक्षा में एआइ तकनीक

स्कूली शिक्षा में एआइ को शामिल करने से छात्रों के तकनीकी ज्ञान में वृद्धि होगी। साथ ही भविष्य की वैश्विक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में हमारा देश अग्रणी भूमिका निभा सकता है

आदित्य कुमार
शिक्षा मामलों के जानकार

प्रतीकात्मक

उत्तर प्रदेश में संचालित अटल आवासीय विद्यालय अब आधुनिक तकनीकी शिक्षा और नवाचार के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित किए जाएंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप उत्तर प्रदेश सरकार प्रत्येक अटल आवासीय विद्यालय में इनोवेशन लैब स्थापित करने जा रही है। इस महत्वाकांक्षी पहल का उद्देश्य ग्रामीण और वंचित वर्ग से आने वाले छात्रों को ड्रोन टेक्नोलाजी, रोबोटिक्स, आटोमेशन, स्पेस साइंस, 3डी प्रिंटिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना है। वस्तुतः एआइ तकनीक धीरे-धीरे सभी क्षेत्रों में फैलती जा रही है। शिक्षा क्षेत्र में भी एआइ ने अपना कमाल दिखाना शुरू कर दिया है। भविष्य में यह तकनीक लोगों के हर काम के लिए जरूरत बन सकती है। स्कूलों में भी बच्चों को एआइ टेक्नोलाजी के बारे में बताया जाने लगा है। बच्चों को एआइ ट्रेनिंग दी जाने लगी है, ताकि बड़े होने के बाद बच्चे एआइ का बेहतर तरीके से उपयोग कर सकें।

उल्लेखनीय है कि 21वीं सदी को ज्ञान, तकनीक और नवाचार की सदी कहा जा रहा है। आज का छात्र केवल किताबों तक सीमित नहीं रह सकता, क्योंकि आने वाला समय एआइ, रोबोटिक्स, डाटा और आटोमेशन पर आधारित है। ऐसे में स्कूली शिक्षा में इन सबका समावेश केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि समय की अनिवार्यता बन गया है। यह शिक्षा प्रणाली को रटंत विद्या से निकालकर कौशल, प्रयोग और नवाचार की ओर ले जाता है। परंपरागत शिक्षा में एक ही कक्षा में सभी छात्रों को एक जैसी गति और पद्धति से पढ़ाया जाता है, जबकि हर छात्र की समझ और रुचि अलग होती है। एआइ आधारित लर्निंग प्लेटफार्म छात्रों की सीखने की गति, गलतियों और कमजोरियों का विश्लेषण कर उन्हें उसी अनुरूप अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराते हैं। इससे कमजोर छात्रों को अतिरिक्त सहायता और तेज छात्रों को उन्नत सीखने के अवसर मिलते हैं। एआइ परीक्षा और मूल्यांकन की प्रक्रिया को भी अधिक प्रभावी बनाता है। यह केवल अंक देने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह बताता है कि छात्र कहां और क्यों गलतियां कर रहा है। इससे शिक्षा परिणाम-आधारित न होकर सीखने की प्रक्रिया-आधारित बनती है।

वस्तुतः रोबोटिक्स शिक्षा छात्रों को प्रयोग और निर्माण के माध्यम से सीखने का अवसर देती है। जब छात्र स्वयं रोबोट बनाते हैं और उसे प्रोग्राम करते हैं, तो विज्ञान एवं गणित जैसे अपेक्षाकृत कठिन समझे जाने वाले विषय भी रोचक बन जाते हैं। रोबोटिक्स विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित को व्यावहारिक रूप में जोड़ता है। इससे छात्रों में तार्किक सोच और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित होती है। इससे वे वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम होते हैं, जिससे उनमें नेतृत्व, सहयोग और नवाचार की भावना विकसित होती है।

एआइ और रोबोटिक्स शिक्षा से स्कूली स्तर पर कई प्रकार के लाभ हो सकते हैं। इससे छात्रों में 21वीं सदी के कौशल का विकास होने के साथ ही रोजगार-उन्मुख और उद्यमिता आधारित सोच का विकास हो सकता है। इसके अलावा, इससे छात्रों में रचनात्मकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होगा, जिससे हमारे युवा वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार हो सकते हैं। आज तकनीक के क्षेत्र में विश्व के अग्रणी देश जिस प्रकार से आगे बढ़ रहे हैं या फिर कह सकते हैं कि हमसे बहुत आगे बढ़ चुके हैं, इसे देखते हुए हमें भी इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ना होगा। इसके लिए स्कूल स्तर से ही छात्रों में तकनीक के प्रति रुचि जगानी होगी। ऐसे होने से आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को भी मजबूती दी जा सकती है।

हालांकि इस राह में चुनौतियां भी कम नहीं हैं। सबसे पहली चुनौती प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। इसके अलावा हमारे स्कूलों में उपकरणों और प्रयोगशालाओं की स्थिति किसी से छुपी नहीं है। यदि हम इस प्रकार की चुनौतियों से निपटने में सक्षम हो जाते हैं तो निश्चित रूप से भविष्य में हम एआइ का उपयोग करते हुए चौथी औद्योगिक क्रांति के माध्यम से देश को बहुत लाभ पहुंचा सकते हैं।

लिहाजा भविष्य में यह जरूरी है कि एआइ को केवल एक विषय न मानकर, शिक्षा की एक पद्धति के रूप में अपनाया जाए। शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाए, कम लागत वाले स्वदेशी तकनीकी समाधान विकसित किए जाएं और क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री उपलब्ध कराई जाए। प्राथमिक स्कूली शिक्षा स्तर से ही छात्रों में तार्किक सोच को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए। स्कूली शिक्षा में एआइ और रोबोटिक्स का समावेश भारत को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के साथ ही बौद्धिक रूप से भी सशक्त बनाएगा।

आजकल

सस्ते श्रम नहीं, नवाचार से विकसित बनेगा भारत

वर्तमान विश्व में केवल बड़े पैमाने पर वस्तुओं के निर्माण से समृद्धि हासिल नहीं की जा सकती है। वहीं सिर्फ उत्पादन करने और विश्व के लिए सस्ता श्रम उपलब्ध कराने से भी कोई राष्ट्र विकसित नहीं बन सकता है। विकसित राष्ट्र के लिए आज सर्वाधिक आवश्यकता ज्ञान, नवाचार और बौद्धिक संपदा पर अधिकार की है। आज जब विश्व चौथी औद्योगिक क्रांति के दौर में प्रवेश कर रहा है तो राष्ट्रों का निर्माण केवल हाथों की मेहनत से नहीं, बल्कि दिमागों की शक्ति से होता है। निर्माण से आगे बढ़कर उच्च गुणवत्ता के सृजन को प्राथमिकता देने पर ही भारत विकसित राष्ट्र बन सकता है

प्रतीकात्मक।

डा. शिवेश प्रताप
संयोजक, विजन विकसित भारत नीति एवं शोध केंद्र

आज के वैश्विक युग में यह धारणा आम है कि यदि कोई देश बड़े पैमाने पर वस्तुओं का निर्माण करता है तो वह स्वतः समृद्ध हो जाएगा, लेकिन वास्तविकता इससे कहीं अधिक जटिल और कठोर है। केवल उत्पादन करना और दुनिया के लिए सस्ता श्रम उपलब्ध कराना किसी राष्ट्र को विकसित नहीं बनाता, विकसित राष्ट्र वही बनते हैं जो ज्ञान, नवाचार और बौद्धिक संपदा पर अधिकार रखते हैं। इस सच्चाई को समझने के लिए आइफोन का उदाहरण पर्याप्त है। चीन में एक आइफोन को असेंबल करने की लागत लगभग 10-15 डालर यानी लगभग एक हजार रुपये होती है, जबकि वही फोन वैश्विक बाजार में 70 हजार से लेकर डेढ़ लाख रुपये तक बिकता है। स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि शेष मूल्य कहां जाता है। इसका उत्तर स्पष्ट है, आइफोन का डिजाइन कैलिफार्निया में तैयार होता है, उसकी चिप ताइवान में बनती है, आपरेटिंग सिस्टम और साफ्टवेयर अमेरिका तथा भारत जैसे देशों के इंजीनियर विकसित करते हैं, और ब्रांड वैल्यू पश्चिमी कंपनियों के पास रहती है। अर्थात वास्तविक लाभ उस देश को मिलता है जो सोचता है, नवाचार करता है और बौद्धिक अधिकारों का स्वामी होता है, न कि उस देश को जो केवल उत्पाद को जोड़ने का कार्य करता है।

सस्ते श्रम का भ्रम : भारत जैसे विकासशील देशों में दशकों तक यह मान्यता बनी रही कि हमारी सबसे बड़ी ताकत सस्ता श्रम है और इसी के आधार पर हमने वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका तय की। प्रारंभिक दौर में इस रणनीति ने रोजगार के अवसर तो दिए, लेकिन लंबे समय में यही सोच हमारे कम क्रय-शक्ति की सबसे बड़ी वजह बन गई। जब कोई अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कम मूल्य वाले कार्यों, जैसे असेंबली, पैकेजिंग या आउटसोर्सिंग पर निर्भर रहती है, तो वहां मजदूरी स्वाभाविक रूप से सीमित रहती है और आय में तेज वृद्धि संभव नहीं हो पाती। कम आय का सीधा असर घरेलू खपत पर पड़ता है, जिससे बाजार की मांग कमजोर रहती है और आर्थिक विकास की गति धीमी हो जाती है। इसका सबसे बड़ा दबाव मध्यम वर्ग पर पड़ता है, जो एक ओर बढ़ती महंगाई से जूझता है और दूसरी ओर सीमित वेतन वृद्धि के कारण अपनी जीवन-शैली और आकांक्षाओं को लगातार समेटने को मजबूर होता है। अर्थशास्त्र में इस स्थिति को 'मिडिल इनकम ट्रैप' कहा जाता है, जहां कोई देश गरीबी से तो बाहर निकल आता है, लेकिन नवाचार और उच्च मूल्य सृजन के अभाव में विकसित अर्थव्यवस्था बनने की दहलीज पर ही अटका रह जाता है।

समृद्ध वैश्विक अनुभव यह सिद्ध करता है कि किसी देश की आर्थिक शक्ति का आधार कम मजदूरी नहीं, बल्कि नवाचार, उत्पादकता और तकनीकी बढ़त होती है। अमेरिका, जर्मनी, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में औसत मजदूरी विश्व के सर्वोच्च स्तरों में है, फिर भी ये देश वैश्विक बाजारों में अग्रणी बने हुए हैं। इसका कारण यह है कि उनकी अर्थव्यवस्थाएं केवल निर्माण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अनुसंधान एवं विकास, डिजाइन, ब्रांडिंग, पेटेंट और उच्च मूल्य वर्धन पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए, जर्मनी की 'मिडलस्टैंड' कंपनियां अत्यधिक विशिष्ट तकनीकी उत्पाद बनाती हैं, जिनका कोई सस्ता विकल्प विश्व में उपलब्ध नहीं होता। जापान और अमेरिका नवाचार के माध्यम से ऐसे उत्पाद और तकनीक विकसित करते हैं, जिनकी मांग मूल्य से अधिक गुणवत्ता और विश्वसनीयता पर आधारित होती है।

वास्तविक संपत्ति : प्रसिद्ध अर्थशास्त्री थामस स्टुअर्ट ने अपनी पुस्तक 'द वेल्थ आफ नालेज' में स्पष्ट रूप से कहा है कि 21वीं सदी की अर्थव्यवस्था में असली पूंजी श्रम या प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि इंटेलेक्चुअल कैपिटल है, अर्थात ज्ञान, नवाचार और कौशल। आज विश्व में वही देश आर्थिक रूप से समृद्ध और स्थिर हैं जो अनुसंधान एवं विकास में निरंतर निवेश करते हैं, उच्च शिक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता मानते हैं और डिजाइन, पेटेंट, साफ्टवेयर तथा ब्रांड जैसे उच्च मूल्य वाले क्षेत्रों में नेतृत्व स्थापित करते हैं। इसी कारण जर्मनी अपनी उन्नत इंजीनियरिंग, दक्षिण कोरिया इलेक्ट्रानिक्स और तकनीक, जापान उच्च गुणवत्ता वाले विनिर्माण और अमेरिका वैश्विक नवाचार के क्षेत्र में अग्रणी बने हुए हैं। इन देशों की सफलता इस तथ्य को रेखांकित करती है कि आधुनिक अर्थव्यवस्था में वास्तविक संपत्ति हाथों की मेहनत से नहीं, बल्कि दिमाग की क्षमता से पैदा होती है।

केवल मैन्युफैक्चरिंग पर्याप्त नहीं : केवल मैन्युफैक्चरिंग पर निर्भर रहना आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था में किसी देश को समृद्ध बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है। अमेरिकी शोधकर्ताओं ग्रेग लिंडन, केनेथ क्रेमर और जेसन डेडिक के संबंधित अध्ययनों में यह तथ्य सामने आया है कि आइफोन की कुल वैल्यू में चीन की हिस्सेदारी दो प्रतिशत से भी कम है, जबकि अधिकांश मुनाफा उन देशों को जाता है जो उसके डिजाइन, साफ्टवेयर और ब्रांड के मालिक हैं। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि उत्पादन की मात्रा से अधिक महत्वपूर्ण उत्पादन पर नियंत्रण और बौद्धिक अधिकार हैं। यह स्थिति केवल मोबाइल उद्योग तक सीमित नहीं है- फैशन, फार्मास्यूटिकल्स, आटोमोबाइल, सेमीकंडक्टर, एआइ और बायोटेक जैसे हर आधुनिक क्षेत्र में वही देश अग्रणी हैं जो नवाचार को नियंत्रित करते हैं, न कि वे जो श्रम प्रदान करते हैं।

भारत के लिए विकसित राष्ट्र बनने का वास्तविक रास्ता शिक्षा और नवाचार से होकर गुजरता है। यदि भारत को सचमुच विकसित देश बनाना है और आम नागरिक की क्रय-शक्ति में ठोस वृद्धि करनी है, तो नीतियों का केंद्र केवल उत्पादन बढ़ाने से हटाकर ज्ञान-आधारित विकास की ओर ले जाना होगा। वर्तमान में भारत उच्च शिक्षा और शोध पर अपनी सकल घरेलू उत्पाद का मात्र 0.37 से 0.4 प्रतिशत ही खर्च करता है, जो वैश्विक मानकों की तुलना में अत्यंत कम है। इसके विपरीत चीन इस क्षेत्र में लगभग 1.2 प्रतिशत और अमेरिका 1.7 प्रतिशत से अधिक निवेश करता है, जबकि आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी) देशों में यह अनुपात और भी ऊंचा है। शिक्षा और अनुसंधान में निवेश का यही अंतर तय करता है कि कौन देश भविष्य की तकनीक, उत्पाद और विचारों का निर्माता बनेगा और कौन केवल दूसरों द्वारा विकसित नवाचारों का उपभोक्ता बनकर रह जाएगा।

विश्व बैंक और संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक संस्थानों ने भी इस विषय पर बार-बार चेतावनी दी है। विश्व बैंक की रिपोर्ट 'द इनोवेशन पाराडोक्स' स्पष्ट रूप से कहती है कि विकासशील देश नवाचार और उच्च शिक्षा में अपेक्षाकृत कम निवेश करते हैं, जबकि इन्हीं क्षेत्रों से मिलने वाला प्रतिफल सबसे अधिक होता है। इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन और ओईसीडी लगातार यह रेखांकित करते रहे हैं कि कौशल विकास, अनुसंधान, तकनीकी शिक्षा और एक मजबूत स्टार्टअप इकोसिस्टम के बिना कोई भी देश वैश्विक अर्थव्यवस्था में केवल उपभोक्ता की भूमिका से बाहर निकलकर मूल्य सृजन करने वाला राष्ट्र नहीं बन सकता।

डिजिटल इंडिया से डिजाइन इंडिया की ओर

डिजिटल इंडिया की उपलब्धियों के बाद अब देश के सामने अधिक निर्णायक लक्ष्य 'डिजाइन इंडिया' की ओर बढ़ना है। भारत के पास आज एक ऐतिहासिक अवसर उपलब्ध है, एक विशाल युवा जनसंख्या, तेजी से मजबूत होता डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और वैश्विक टेक कंपनियों की सक्रिय उपस्थिति। लेकिन केवल कोड लिखना या सेवाएं देना ही किसी राष्ट्र को तकनीकी महाशक्ति नहीं बनाता। इसके लिए डिजाइन, डेवलपमेंट, डिस्कवरी और डिस्क्रिप्शन- इन चारों क्षेत्रों में नियंत्रण आवश्यक है। जब तक भारत अपने सेमीकंडक्टर और चिप्स स्वयं विकसित नहीं करेगा, अपनी तकनीकों पर पेटेंट नहीं लेगा, अपने उच्च शिक्षण संस्थानों को वास्तविक रिसर्च हब में परिवर्तित नहीं करेगा और उद्योग तथा शिक्षा के बीच गहरी साझेदारी स्थापित नहीं करेगा, तब तक देश की अर्थव्यवस्था उच्च मूल्य सृजन की ओर नहीं बढ़ पाएगी और आम नागरिक की क्रय-शक्ति सीमित ही बनी रहेगी।

नीति-निर्माताओं के लिए, संदेश बिल्कुल स्पष्ट है कि यदि वास्तव में विकसित भारत के सपने को साकार करना है, तो सोच और प्राथमिकताओं में बुनियादी बदलाव करना होगा। शिक्षा को अब केवल सरकारी खर्च के रूप में नहीं, बल्कि दीर्घकालिक राष्ट्रीय निवेश के रूप में देखना होगा। नवाचार को केवल स्टार्टअप संस्कृति तक सीमित रखने के बजाय उसे उद्योग, कृषि, स्वास्थ्य और शासन जैसे सभी क्षेत्रों तक विस्तार देना होगा। इसके साथ ही अनुसंधान एवं विकास को सरकारी और निजी, दोनों स्तरों पर संगठित और निरंतर समर्थन देना अनिवार्य है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि युवाओं को केवल नौकरी खोजने के लिए तैयार करने के बजाय उन्हें नौकरी सृजित करने वाला, नवाचार करने वाला और मूल्य पैदा करने वाला बनाना होगा, क्योंकि किसी भी राष्ट्र का भविष्य युवा पीढ़ी की रचनात्मक क्षमता पर ही टिका होता है।

आज जब विश्व चौथे औद्योगिक क्रांति में प्रवेश कर रहा है तो यह समझना चाहिए कि राष्ट्रों का निर्माण केवल हाथों की मेहनत से नहीं, बल्कि दिमागों की शक्ति से होता है। ऐसे में आज आवश्यकता है हाथों की तुलना में दिमागों में अधिक निवेश करने की, निर्माण से आगे बढ़कर सृजन को प्राथमिकता देने की और सस्ते उत्पादन की मानसिकता से बाहर निकलकर उच्च गुणवत्ता सृजन की दिशा में कदम बढ़ाने की। यदि भारत को अपनी जनता की क्रय-शक्ति में वास्तविक वृद्धि करनी है और देश को वास्तविक अर्थों में विकसित बनाना है, तो शिक्षा और नवाचार को केवल नीति का हिस्सा नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय आंदोलन बनाना ही होगा, क्योंकि राष्ट्र भविष्य को जोड़कर नहीं, बल्कि भविष्य को गढ़कर विकसित होते हैं। **(शिवेश प्रताप)**